अक्षयनिधि तपनो विधि

प्रातः स्मरणीय गुरुणीजी महाराजश्री
सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी.
खंभातना सुप्रसिद्ध शेठ अमरचंद्र प्रेमचंदना सुपुत्र
शेठ छगनलालभाइ अमरचंदनी द्रव्यसहायथी
तेमनी सुपुत्री बहेन हीराना स्मरणार्थे

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वीरसंवत् २४५० सने १९२४ संवत् १९८० प्रत १०००
श्री सूर्यप्रकाश प्रीन्टींग प्रेस टंकशाळ-अमदावाद

प्रस्तावना

खंभात नदरना श्रावक समुदायमां सुप्रसिद्ध शेठ अमरचंद प्रेमचंदना सुपुत्र शेठ छगनलालभाइ अमरचंदनी सुपुत्री व्हेन हीरा के जेओ पोताना कुटुंबना ससर्गथी बाळपणथीज धर्म संस्कारो होइ फक्त १० वरसनी लघुवयमां संवत १९८० ना श्रावण वदी चोथे घणा उमगथी अक्षयनिधि तपनो आरंभ कर्यो व्हेन हीराए त्रण एकासणा निर्विघ्ने सारी रीते क्रिया सहित कर्या परंतु श्रावण वदी ७ एकाएक तार आववो शरु थयो अने ते तार एवो असाध्य आव्यो के अनेक उपायो कर्या छता छेवटे श्रावण-वद १४ मात्र बार वरसनी लघु वयमाज शुभ भावनाने अंते शांत धर्म पामी तेथी तेना कुटुंबमां तेमज तेना मातापीताने घणुंज लागी आव्युं परंतु तेओ धर्मीष्ट होइ ससारनी विचित्रता समजता होवाथी अने प्रसंगोपात तेज स्थलमां रहेला परमपूज्य गुरुणीजी महाराजश्रीसौभाग्यश्रीजीए सदुपदेश आपी तेमना मनने शांती आपी अने तेमना उपदेशथी तेमना मातापीतानी एवी इच्छा उत्पन्न थइ के व्हेन हीरा आ अक्षयनिधि तप करता देवलोक पामीछे तेथी तेना अंत समयनी भावनाने अनुसरीने तेना श्रेय निमित्ते तेमज तेनी कायमनी यादगिरि

रहेवाना हेतुथी आ अक्षयनिधि तपना विधि विधान तथा साथे-नवपदनो विधि वीसस्थानकतपनी ज्ञानपचमीनी दीवालीना गरणानी विधिओ तथा चेत्यवदनो स्तवनो सझायो गहुलीओ आदि नाखी साथे साथे ते व्हेन हीरानो फोटो विगर नाखी आ बुक समाप्त करवामा आवी छे तेमा आवला विषयोनी अनुक्रमणीका जोवाथी विशेषे माहिती मलशे विशेषमा जणाववानु के आ बुक परमपूज्य गुरुणीजी महाराजथी सौभाग्यश्रीजीना सदुपदेशथी बहेन हीरांना पीताश्रीनी आर्थीक सहायथी छपाववामा आवी छे जेथी तेना राधी जीवोने भेट तरीके आपवानी छे आ बुक सुधारवामा सारी रीते खत राखवामा आवेली छे छता पण दृष्टि दोष अगर प्रेस दोष आदिथी काइ भुलचुक रही गइ होय अगर तो जीनाज्ञा विरुद्ध लखाइ गयु होय तो तेनी क्षमा चाहीमीच्छा दुष्कृत देवा पूर्वक सुधारी वाचवा भलामण करवामा आवे छे

एज मुक्तेच्छुकीं बहूना

मिति
संवत १९८१ ना
मागशर वद १०
ने रवीवार

ली
प्रसिद्ध कर्त्ता

छंद.

धर्म धारी परोपकारी, अमरचंद्र शुभ नाम छे,
परमार्थ कामो अति करी, स्त्रीकार्यु स्वर्गनु धाम छे ॥१॥
पुत्र पाच पराक्रमी जेनी किर्ति सूर्य समान छे,
खंभात शहेर श्री सघमा, कर्या साहस धर्मना काम छे ॥२॥
तेमा श्रेष्ठी छगनभाइ ते, सघमा मुगट समान छे,
पुत्री तेमनी अति पवित्र, हीरा अमूल्य नाम छे ॥ ३ ॥
रत्नखाणमा रत्न पाक्यु, शोभाव्यु शुभ नाम छे
वय बारमा तन आदरी, कर्या सद्गति ठाल मुकाम छे ॥४॥

(राग, केदारीया थासु भीत करीरे साचाभावथी.)

अमरचंद्र शुभ नाम धर्यु, जे देशविदेशे गवायु,
धर्म अर्थने गुरभक्तिमा, अमर नाम धराव्युरे,
वीर धर्म आधारी, अर्प्यु तन मन धन पर उपकारमा ॥१॥
पुत्र पाच पण धर्मना धोरी, खंभायत शहेर दीपावी,
साहस करी जीन धर्म सोभाव्यो, अमर नाम धरावीरे वीर २
अमर पुत्र जे छगनभाइ ते, पर हित नीत करनारा,
विघ त्रिव भावथी सघनी भक्ति, वीरआज्ञा धरनारारे. वीर.३
ते शुभ शेठना भुवननी अंदर, पुत्री रत्न समान,
विनय विवेकने निर्मळ बुद्धी, हीरा अमुल्य नामरे. वीर ४

रमभात वदरना सुप्रसिद्ध शेठ अमरचद प्रेमचदना सुपुत्र
शेठ छगलशीभाई अमरचदनी मर्हुम सुपुत्री बहेन हीरा



जन्म संवत १९६९
कार्तिक वद ६

अवसान संवत १९७०
श्रावण वद १४

बाळपणे पेरवणी लईने, तप जप धर्मने धरती
बुद्धी प्रबळ धरी धर्म करणीमां,सहुनी नजरे पडतीरे. वीर ५
संवत अगनोतेर कार्तिक वद छठे, जन्म धर्मवश ली गो,
दशान्ध्य वय श्रावण वद चौदशे,मुकाम स्वर्गमां किधोरे. वीर ६
वय अगीयार वरसनी थातां, विवेक विद्या पुर,
सूर्य कीरणसम भाव प्रगट थया, तप करवा आतुरे. विर ॥७॥
सौभाग्यश्रीजीनी वाणि सुणतां, उल्टयो भाव उमग
संवत एशी श्रावण वद चोथे,अक्षयनिधि तप आरंभरे. विर ८
मातापिता मनमा विचार, पुन्य उदय मन मानी,
धर्म प्रवीण पुत्री गुण पेटी,कृतार्थ जन्मने जाणीरे विर ॥९॥
साध्वीजी सौभाग्यश्रीजी, ज्ञानतणा भडार,
हुकम करी हिरा गुण नीरखि,वद् वार हजाररे विर. १०
संवत ओगणिशे एंशि वर्षे, शुद अष्टमि आसोमास,
गुरु कृपा अने देव दया करीने, रचनार सगना दासरे विर.
देव गुरुश्री सपनी भक्ति, जे छे मुज आधार
चीमनलाल बीजनगर वासी,अरिहत गुण गानाररे विर १२
घेर घेर प्रगट्या रत्न सम थाजो, आशीश मुज अतरनी
हिरासम चेतन सहु करजो,पामशो भव जल तरणीरे विर १३

संपूर्ण

अनुक्रमणीका.

विषय	पृष्ठ
१ प्रस्तावना	
२ छंद	
३ पर्युषण पर्वना चैत्य वंदनो	१
४ अक्षयनिधि तपनो विधि	९
५ बीजो विधि	११
६ अक्षयनिधि तपनु स्तवन	२१
७ अक्षयनिधि तपनु आराधन करनार सुन्दरीनी कथा.	२९
८ वीशस्थानक तप विधि	४१
९ ज्ञान पचमी तप विधि	४४
१० दीवालीना गरणानी विधि	४५
११ श्रीसिद्धचक्र नवपद ओळिनी विधि	४७
१२ नवपदना चैत्यवंदनो	४९
१३ महावीर स्वामिना चैत्यवंदनो १-२	४९
१४ पर्युसणनि सस्कृत स्तुति	५०
१५ नेमिनाथनि स्तुति	५१
१६ ज्ञानपचमिनि स्तुति	५२

१७ दिवाळिनुं स्तवन. ५२
१८ पजुसणनि सज्झाय. ५५
१९ नवकार वालिनि ,, ५६
२० अयवंति कुमारना १३ ढालिया ५७
२१ नेमीनाथनो चोक ७६
२२ गहुंलीओ ८ तेमां बेन हीराना सरखी २ तथा त्रीजी कल्पसूत्रनी अने चोथी पजुसणपर्वनी ७९–८३
२३ मिथ्यात्व पर्वनी गहुंलीओ ३ ८३–८६
२४ मझुजीने पारणा वखते कहेवानी ढाल तथा पोंखणुं बीजुं त्रीजुं. ८६–८७
२५ राजुलनो विजणो ८८

समाप्त

प्रात स्मरण

मगल भगवान् वीरो, मगल गौतमः प्रभु ॥ मगल स्थूलभद्राद्या, जनधर्मोऽस्तु मगल ॥१॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने॥सर्वलब्धि निधानाय, गौतमस्वामीने नमः॥२॥ अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भडार ॥ जो गुरु गौतम समरिये, मनवच्छित दातार ॥३॥ गामतणे परसारडे, गुरुगौतम समरन्त ॥ इच्छाभोजन घर कुशळ, लच्छीलील करन्त ॥ ४ ॥ पुडरीक गौतमप्रमुख, गणधर गुणसपन्न ॥ मह उठी नित प्रणमिये, चउदहसह बावन्न ॥५॥सुरगोतरुमणी सपने, जेहने लीधे नाम ॥ एहिज अक्षर समरता, सीजे वछित काम ॥६॥

अथ श्री गौतमगुरुनी विनती

(चोपाई)

जयो जयो गौतम गणधार, महोटी लब्धितणो भडार सभरे वाछीत सुखदातार जयो जयो गौतम गणधार १ वीर वजीर वडो अणगार, चौदहजार मुनि शिरदार जपता नाम होय जयकार, जयो जयो० २ गयगमणी रमणी जगि सार, पुत्र कलत्र सज्जन परिवार, आवे कनक कोडि विस्तार, जयो जयो, ३ घरे घोडा पायक नहि पार, सुखासन पालखी उदार, वैरी विकट थाय विसराल, जयो जयो० ४ मह उठी जपिये गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमला दातार, रूप रेख मयण अवतार, जयो जयो० ५ कवि रूपचद गणि केरो शिष्य, गौतम गुरु प्रणमे निश दीश, कहे चद ए सुमतागार, जयो जयो गौतम गणधार ६

॥ श्री જીનેશ્વરાય નમ ॥

श्री पर्युपण पर्वनां चैत्यवंदना.

चैत्यवदन १ लुं

श्री शत्रुंजय शणगार हार, श्री आदि जिणद,
नाभी राजा कुल चन्द्रमां, मरुदेवा नद ॥ १ ॥
काश्यपगोत्र इक्ष्वाकुवंश, विनीतानो राय,
धनुषपांचसे देहमान, सोवनसम काय ॥ २ ॥
वृषभ लांछन धुरवटीये सघसकल शुभरीत,
अट्ठाइधर आराधीये, आगम वाणी विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवदन २ जु

प्रणमु श्री देवाधिदेव, जीनवर श्री महावीर,
सुरनर सेवे शांत दांत, प्रभु साहस धीर ॥ १ ॥
पर्व पर्युपण पुण्यथी, पामी भवी प्राणी
जैन धर्म आराधीये, समकीत हित जाणी. ॥ २ ॥
श्री जिन प्रतिमा पूजीये, कीजे जन्म पवित्र,
जीव जतन करी साभलो, प्रवचन वाणी विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवंदन ३ जु

कल्पतरु सम कल्पसूत्र, पूरे मन वाछित,
कल्पसूत्र धुरथी सुणो, श्री महावीर चरित्र ॥ १ ॥
क्षत्रि कुंड ग्राम्य नयर, सिद्धारथराय,
राणी त्रिशलातणी कुखे, कचन समकाय ॥ २ ॥
पुष्फोत्तर स्वरथो चव्यायें, उपन्या पुण्य पवित्र
चतुरा चौद सुपन लहे, उपजे विनय विनीत. ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ४ थु

सुपन विचारे सुत होस्ये, त्रिभुवन शणगार,
त दिनथी रिद्धे वध्या, धन अखुट भंडार. ॥ १ ॥
साडासात दिवस अधिक, जन्म्या नव मासे,
सुरपति करे मेरु शिखरे, ओच्छव उल्लासे ॥ २ ॥
कुंकुमहाथा दिजीयेये, तोरण झाक झमाल,
हर्षे वीर हुलरावीये, वाणी विनीत रसाल ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ५ मु

जीननी व्हेन सुदर्शना, भाई नदिवर्द्धन
राणी यशोदा पद्मणि, वीर सुकोमल रत्न ॥ १ ॥

देई दान सवत्सरी, लेइ दीक्षा स्वामी,
कर्म खपावी हुआ क्वली, पचमीगति पामी. ॥ २ ॥
न्दिवाली दिवस दिनेश, सय सकल शुभरीत,
अट्टमकरी तेला करे, सुणजो एकजचित्त. ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ६ ठुं

पार्श्व जिनेश्वर नेमनाथ, समुद्र सुविस्तार
सुणीये आदिश्वर चरित्र, श्री जीनना अतर ॥ १ ॥
गौतमादिक स्थिरावली, शुद्ध समाचारी
पर्वराय चोथे दीने, भाख्या गणधारी. ॥ २ ॥
ज्ञान दर्शन चारित्रतपए, जिनधर्मे दृढचित्त,
जिनप्रतिमा जीन सारीखी, वन्दु सदा विनीत ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ७ मु

पर्वराज सवत्सरी, दिनदिन मल्ये सेवो,
श्लोक बारसे कल्पसूत्र, मुनि मुखे सुणेवो. ॥ १ ॥
पाटपरपर बार बोल, भाख्या गुरु हीरे,
साप्रत श्री विजयमानसूरि, गच्छा धिप धीरे. ॥ २ ॥
जीनशासन शोभा करुये, प्रीतिविजय गुरु शिष्य,
विनीतविजय कहे वीरने, चरणे नामु शिश ॥ ३ ॥

चैत्यवदन ८ मु

वडा कल्प पूर्व दीने, घरे कल्पने लावो,
राती जगा प्रमुखे करी, शासन सोहावो ॥ १ ॥
हयगयरथ शणगारीने, कुमरलावो गुरु पासे,
वडा कल्प दीन साभळो, वीर चरित्र उल्लासे ॥ २ ॥
छट्ठ द्वादश तप कीजायेजे, धरिये शुभ परिणाम,
स्वामि वच्छल प्रभावना, पूजा अभिराम ॥ ३ ॥
जीन उत्तम गौतम मत्ये अे, पडेजो एकवीशवार,
गुरुमुख पद्मथी सुणिये, तो पामे भवपार. ॥ ४ ॥

चैत्यवदन ९ मु

नव चौमासि तप कर्या, त्रण मासीदोय,
दोय अढीमासी कर्या, तीम दोढ मासीदोय ॥ १ ॥
वहोतेर पास क्षमण कर्या, मास क्षमण कर्या बार,
खट बे मासि तप आदर्यो, बार अठ्ठम तप सार ॥ २ ॥
खट मासि एक तेम कर्यो, पणदिन उण खटमास,
बसें ओगणत्रीस छठ भल्ा, दीक्षा दिन एक खास ॥३॥
भद्र प्रतिमादोयतीम, पारण दिन जास,
द्रव्याहार पानक कर्यो, त्रणसे ओगण पचास ॥ ४ ॥

छद्मस्थ एणीपरे रह्या, सह्या परिसह घोर,
शुक्ल ध्यान अनलेकरी, गाल्या कर्म कठोर ॥ ५ ॥
शुक्लध्यान अंतर रह्या ये, पाम्या केवल नाण,
पद्मविजय कहे प्रणमता, लहीये नित्य कल्याण ॥ ६ ॥

श्री पर्युषण चैत्यवन्दन १० मु

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्पि विहार
चार मासान्तर थीर रहे, एहीज अर्थ उदार। ॥ १ ॥
आषाढ शुद चउदश थकी, संवत्सरी पचास
मुनिवर दिन सित्तेरमे, पडिक्कमता चउमास ॥ २ ॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान,
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले एकतान ॥ ३ ॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरु भक्ति विशाल,
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिवमाल। ॥ ४ ॥
दर्पणथी निजरूपनो, जुवे सुदृष्टि रुप
दर्पण अनुभव अर्पणे, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
आत्म स्वरूप विलोकता ए, प्रगट्यो मित्र स्वभाव,
राय उदायी खामणा, पर्व पर्युषण दाव ॥ ६ ॥
नव वखाण पूजी सूणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा
पचमी दीन वांचे सूणे, होय विरोधी नीमा। ॥ ७ ॥

ए नहीं पर्व पचमी, सर्व समाणी चोथे,
भवभीरु मुनि मानसे, भाग्यु अरिहानाथे ॥ ८ ॥
श्रुत स्वली वयणा सुणीए, ल्ही मानव अवतार,
श्री शुभ वीरने शासने, पाम्या जयजयकार ॥ ९ ॥
इति पर्युषण पर्व चैत्यवन्दन सपूर्ण ॥

अथ ऋषभजिन चैत्यवन्दन ११ मु

जय जय नाभि नरिंदनन्द, सिद्धाचल मडन,
जय जय प्रथम जिणद चद, भवदु ख विहडण ॥ १ ॥
जय जय साधु सुरीन्द वृन्द, वदिय परमेश्वर,
जय जय जगदानन्द चद, श्री ऋषभ जिनेश्वर ॥ २ ॥
जय जय श्री जिनधर्मनो ए, दायक जगमा जाण,
तुज पदपकज नित्य नमु, निशदिन नयन कल्याण ॥३॥

अथ शातिनाथ चैत्यवन्दन १२ मुं

जय जय शाति जिणद देव, हथ्थिणा पुरस्वामी,
विश्वसेन कुळ चद सम, प्रभु अतरजामी ॥ १ ॥
अचिराउरसरहस जिम, जिनवर जयकारी,
मारी रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥
सोलमा जिनवर प्रणमीये, नित्य उठी नामी शिश,
सुरनर भूप प्रसन्न मन, नमता वाधे जगीश ॥ ३ ॥

श्री पार्श्वजिन चैत्यवन्दन १३ मु

पुरिसादाणी पार्श्वनाथ, नमीये मनरग,
नीलवरण अश्वसेननन्द, निर्मल नि सग || १ ||
कामितदायक कल्प शाख, वामा सुत सार
श्री गरडोपुर स्वाम नाम, जपीये निरधार || २ ||
त्रिभुवनपति नेमिसमोये, जाम अखडित आण;
एक मने आराधतां, लहीये कोड कल्याण || ३ ||

अथ श्री नेमिजिन चैत्वदन्न १४ मु

समुद्र विजय कुलचद नद, शिवादेवी जाया,
यादव वश नभो मणि, सौरीपुर ठाया || १ ||
बालथकी ब्रह्मचर्य धर, गतमार मचार;
भोक्ता निज आत्मिक गुण, त्यागी ससार || २ ||
नि शरण जग जीवनीये, आशानो विश्राम,
दीन दयाल शिरोमणि, पूरण सुरतरु काम || ३ ||
पशुना पोकार शुणि करी, छाडी गृहवास,
तत्क्षण सयम आदरी, करी कर्मनो नाश || ४ ||
केवल श्री पामी करी ए, पहोच्या मुक्ति मोजार
जन्ममरण भय टालवा, ज्ञान सदा सुखकार || ५ ||

श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवन्दन १५ मुं

वर्द्धमान जिनवर धणी, प्रणमु नित्य मेव,
सिद्धारथ कुल चंदलो, सुर निर्मित सेव ॥ १ ॥
त्रिशलाउयरसरहंससम, मगध्यो सुर कंद
केसरी लछन जिमन तनु, कंचनमय इन्द. ॥ २ ॥
महावीर जगमा वडोय, पावापुरी निर्वाण,
सुर नर भूप नमे सदा, पामे अविचल ठाण. ॥ ३ ॥

अथ सर्व जिन चैत्यवन्दन १६ मु

श्री मधर प्रमुख नमु, विहरमान जिन वीश
ऋषभादिक वली वंदिये, सप्त जिन चोवीस ॥ १ ॥
सिद्धाचल गिरनार आबु अष्टापद वली सार,
समेत शिखर ए पांच तीर्थ, पंचम गति दातार ॥ २ ॥
ऊर्ध्व लोक जिनवर नमु, ते चोरासी लाख,
सहस सत्ताणु उपरे, त्रेविस जिनवर भाख ॥ ३ ॥
एकसो बावन क्रोडवली, लाख चोराणु सार
सहस चौत्रालीस सातसें, साठ जिन पडिमाउच्चार ॥४॥
अधो लोक जिन भवन नमु, सातक्रोड बहोतेर लाख,
तेरसें क्रोड नेव्यासी क्रोड, साठ लाख चित राख्य॥५॥

व्यंतर ज्योतिषीमां वळीये, जिन भुवन अपार
ते भवि नित्यवन्दन करो, जीमपामो भवपार ॥ ६ ॥
तीर्छा लोके शाश्वता, श्री जिन भुवन विशाल,
बत्रीसेंने ओगणसाठ, वंदु थइ उजमाल ॥ ७ ॥
लाख त्रण्य एकाणु सहस, त्रणसें विश मनोहारः
जिन पडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥८॥
त्रण्य भुवन मांहे वळीए, नामादिक जिनसार
सिद्ध अनंता वंदीये, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥

श्री अक्षयनिधि तप

घटं संस्थाप्य देवाग्रे गन्धपुष्पादिपूजितम् ।
तपो विधीयते पक्षं तदक्षयनिधि स्फुटम् ॥ १ ॥

आ तप अक्षयनिधि (अखूट भंडार) नी जेवो होवाथी तेनु नाम अक्षयनिधि तप छे ते श्रावण वद चोथने दिवसे शरु करवो ते दिवसे जिनेश्वरनी प्रतिमा आगळ गायना छाणथी भूमि लींपीने ते पर गहुंली करी तेना पर कुंभ स्थापन करवो (ते कुंभ सुवर्णनो रूपानो के अन्य उत्तम धातुनो अथवा

छेवट माटीनो लेवो) ते कुंभ विचित्र प्रकारना गंध पुष्पोथी पूजवो. तथा तेमां सुवर्ण, मणि, मुक्ताफळ, सोपारी विगेरे नाखीने तेनुं स्थापन करवुं. पछी पंदर दिवस सुधी तेनुं नित्य पूजन करवुं जिनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करीने घटमां अक्षतनी अंजली दररोज नाखवी (ते अंजलीमां सोनानाणुं, रुपानाणुं, सोपारी विगेरे लेवुं) कुंभ पासे नैवेद्य ढोकवुं दररोज एकासणुं करवुं हमेशां कुंभ पासे नृत्य, गीतादिक उत्सव करवो ए रीते पर्युषणा पर्यंत आ तप करवो (संवत्सरीने दिवसे एटले छेल्ले दिवसे उपवास करवो) आ रीते चार वर्ष पर्यंत आ तप करवो उद्यापनमां मोटी स्नात्र विधि पूर्वक नाना प्रकारना पक्वान्न, फळ विगेरे ढोकवा संघवात्सल्य संघपूजा करवी आ तप करवाथी सर्व प्रकारनी संपत्ति प्राप्त थाय छे

बीजी रीते अक्षतनी मुठी हमेशा कुंभमां नाखवी जेटला दिवसे ते घट पूर्ण थाय तेटला दिवसप्रतिदिन एकासणादिक तप करवो बीजो सर्व विधि तथा उद्यापन उपर प्रमाणे जाणवुं आ श्रावकने करवानो आगाढ तप छे गरणुं " नमो नाणस्स " ए पदनुं नमस्कारवाळी वीश प्रमाण गणवुं साथीया विगेरे ५१ एकावन करवा-

---

२ श्री अक्षयनिधि तप विधि (बीजो)

आ तप श्रावण वद ४ ने दिवसे शरु करी सोळ दिवसे पूरा करवो तेमा सुवर्णनो रत्नजडित कुंभ करावबो अथवा शक्ति प्रमाणे बीजो काइ रूपा विगेरे धातुनो करावबो अथवा छेवट शक्ति न होय तो माटीनो करावबो पछी ते कुंभ घरमा, देरासरमां अथवा उपाश्रये पवित्र स्थाने डागरनी ढगली करी ते उपर पधरावबो (धनना सुधी कुंभ पासे अखंड दीवो फानसमा यत्नापूर्वक १६ दिवस सुधी राखवो) तेनी समीपे स्वस्तिक करी ते उपर श्री कल्पसूत्र पधरावबु दररोज बे टंक पडिकमणु करवु, उभयकाल पडिलेहण करवा भूमि शयन करवुं, ब्रह्मचर्य पाळवु, एकासणानो तप १६ दिवस पर्यंत [1]करवो, छेल्ले दिवसे एटले भाद्रपद शुदि ४ थे (सवच्छरीए) उपवास करवो, आ प्रमाणे चार वर्ष पर्यंत करवाथी ६४ दिवसे आ तप पूर्ण थाय छे दररोज देवपूजा करवी पुस्तक उपर चदरवो बांधवो ज्ञानने धूप दीप करी हमेशा रूपानाणे पूजवु (क्यारे पूजवु ते विधिमा बतावेल छे) शक्ति न होय तो पहले छेले दिवसे रूपानाणे पूजवु, अने वचला दिवसोमा

---

१ कोई प्रतमा बेसणु पण थइ शके एम लख्यु छे

यथाशक्ति द्रव्य वडे पूजवु 'नमो नाणस्स' ए पदनी २० नवकारवाळी दररोज गणवी. (कोइ जग्याए ॐ ह्रिँ श्रीँ क्लीँ नमो नाणस्स ॥एम कहेल छे.) २० लोगस्सनो काउसग करवो नीचे बतावेली विधि मुजब दररोज विधि करवी, कुभनी उपर श्रीफळ मूकी लीला के पीळा रेशमी वस्त्रवडे बांधी राखवो दररोज तेनी अंदर विधिने अंते एकेक पसली अक्षतनी नाखवी सोळ दिवसे कुभ भराइ जाय तेम करवु छेल्ले दिवसे कुभनी समीपे रात्रि जागरण करवु पूजा प्रभावना करवी अक्षयनिधि तपनु स्तवन दररोज गावु सांभळवु. पारणाने दिवसे (भाद्रपद शुदि ५ मे) कुभने फुलनी माळा पहेरावी सौभाग्यवती स्त्रीने माथे मूकवो सर्व जातिना पकवान्न सुखडी विगेरे यथाशक्ति बनावी, तेना थाळ पण सौभाग्यवती स्त्रीओने माथे मूकवा. हाथी घोडा वाजींत्रो विगेरेथी मोटी धामधुम साथे वरघोडो चडावी कुभ लइने देरासर आववु कुभवाळी स्त्रीओए त्रण प्रदक्षिणा करी प्रभु पासे कुभ मूकवो नैवेद्यना थाळ पण प्रभु पासे धरवा ज्ञानना पुस्तकने गुरमहाराज पास लइ जइ त्यां पधरावी गुरुपूजा तथा ज्ञानपूजा रूपानाणाथी करवी (गुरुपूजानु द्रव्य गुरु समिप धरवु) ते दिवसे यथाशक्ति स्वामीवात्सल्य, प्रभावना विगेरे करवु जेटला स्त्री के

पुरुष आ तप करता होय ते दरेकने माटे कुंभ जूदा जूदा पधराववा. कलससूत्र एकज पधराववुं. आ तप श्रावकने करवानो छे. आ भव परभवमा महान् लाभ आपनार आ तप छे

दररोज करवानी विधि नीचे प्रमाणे

३ श्री अक्षयनिधि तपनी विधि

प्रथम ईर्यावही प्रतिक्रमवा, पछी इच्छाकारेण० अक्षयनिधि तप आराधन निमित्ते चैत्यवंदन करु ? ईच्छं कही नीचे प्रमाणे चैत्यवंदन करवु

शासन नायक सुखकरण, वर्धमान जिनभाण। अहनिश एहनी शिर वहु, आणा गुणमणिखाण ॥ १ ॥ ते जिनवरथी पामीया, त्रीपदो श्री गणधार। आगम रचना वहु विध, अर्थ विचार अपार ॥२॥ ते श्री श्रुतमा भाषियाए, तप वहु विध सुखकार। श्री जिन आगम पामीने, साधे मुनि शिव सार ॥ ३ ॥ सिद्धांतवाणी सुणवा रसिक, श्रावक समकित धार। इष्ट सिद्धि अर्थे कर, अक्षय निधि तप सार ॥ ४ ॥ तप तो सूत्रमा अति घणा, साधे मुनिवर जेह। अक्षय निधानने कारणे, श्रावकने गुण गेह ॥ ५ ॥ ते माटे भवी तप करोए, सर्वु

ऋद्धि मळे सार। विधिशु एह आराधता, पामीजे भवपार॥६॥ श्री जिनवर पूजा करो, त्रिक शुद्धे त्रिकाळ। तेम वळी श्रुतज्ञाननी, भक्ति थइ उजमाळ ॥७॥ पडिक्कमणां बेटकना, ब्रह्मचर्येने धरीए। ज्ञानीनी सेवा करी, सहेजे भवजळ तरीए ॥८॥ चैत्यवदन शुभ भावथीए, स्तवन थोः नमस्कार। श्रुतदेवी उपासना, वीरविजय हितकार ॥ ९ ॥ पछी जंकिंचि कहीनेनमुथ्थुण कहवु, पछी बे जावंति कही नमोऽर्हत् कही नीचे प्रमाणे स्तवन कहवु

(लावो लावोने राज मोंघा मूला मोती–ए देशी)

तपवर कीजे रे, अक्षय निधि अभिधाने सुखभर लीजेरे, दिन दिन चढते वाने (ए आंकणी) पर्व पजूसण पर्व शिरोमणि, जे श्री पर्व कहाय। मास पास छठ दसम दुवालस, तप पण ए दिन थाय ॥१॥ तपवर० पण अक्षयनिधि पर्व पजूसण, केरो कहे जिन भाण। श्रावण व चोथे प्रारंभी, संवच्छरी परिमाण ॥ २ ॥ तपवर० ए तप करता सर्व ऋद्धि वरे, पग पग प्रगटे निधान। अनुक्रमे पामे तेह परम पद, सादयी नाम प्रधान ॥ ३ ॥ तपवर० परमस्सरथी कर्म बधाणु, तेणे पामी दु खजाळ। ए तप करता ते ... कर्म थयु विसराळ ॥४॥ तपवर० ज्ञान पूजा श्रुत

देवी काउसग, स्वस्तिक अति सोहावे। सोवन कुंभ जडित नि-जगक्ति, सपूरण क्रमे थावे ॥ ५ ॥ तपवर० जघन्य मध्यम उत्कृष्टथी करीए, इग दोय तिन वरीस। वरस चोथे श्रुत देवी निमित्त, ए तप वीशवावीश ॥ ६ ॥ तपवर० एणे अनुसार ज्ञानतणु दर, गरणु गणीए उदार। आवश्यकादि करणी सयुत, करतां लहे भवपार ॥७॥ तपवर० इह भव परभव दोष आशसा, रहित करो भवि प्राणी। जे पर पुद्गल ग्रहण न करशु, ते तप कह वरनाणी ॥ ८ ॥ तपवर० रातिजगा पूजा परभावना, हय गय रथ शणगारीजे। पारणा दिन पच शब्दे वाजे, राजते पधरावीजे ॥ ० ॥ तपवर० चैत्य विशाळ होय तिहां आवी, प्रदक्षिणा त्रणी दीजे। कुंभ विविध नैवेद्य मथाले, प्रभु आगळ ढोइजे ॥ १० ॥ तपवर० राजनपुरे ए तप मुणी बहु जण, थया उजमाल तप काजे। एह मुख्य महाण ओछवमा, मसालीया देवराज ॥ ११ ॥ तपवर० सवत अढार तेताली वरसे, ए तप बहु भवी कीधो। श्री जिन उत्तम पाद पसाये, पद्मविजय फळ लीधो ॥१२॥ तपवर०

त्यार पछी जयवीयराय० कहो "सुयदेवयाए करेमि काउ-स्सग्ग" अन्नथ्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी

नमोऽर्हत् कही " सुयदेवया भगवइ, नाणावरणीय कम्मस-घाय । तेसिं खवेउ सयय, जेसिं सुयसायरे भत्ति ॥ १ ॥ " ए थोई कहेवी पछी पच्चक्खाण करवु पछी पूजानी ढाल कहवी ते नीचे प्रमाणे—

दुहा

सप्तम पद श्री ज्ञाननो, सिद्धचक्र पदमाही । आराधीने शुभ मने, दिन दिन अधिक उछांहि ॥ १ ॥ अन्नाणसमोह-तमोहरस्स, नमो नमा नाणदिवायरस्स । पचप्पयासु उवगारगस्स, सत्ताण तव्वत्थपयासगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी सर्व अज्ञान रोधो, जिनाधीश्वर प्रोक्त अर्थावबोधो । मति आदि पच प्रकार प्रसिद्धो, जगद्भासते सर्वदेशाविरुद्धो ॥ २ ॥ यदीय प्रभावे सुभक्ष अभक्ष, सुपेय अपेय सुकृत्य अकृत्य । जेणे जाणीए लोक मध्ये सुनाण, सदा मे विशुद्ध तदेव प्रमाण ॥ ३ ॥

ढाल

भव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावे जी । पर-जाय धर्म अनतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १ ॥ (चाल) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भाव विलच्छना ।

*

मति आदि पंच प्रकार निर्मळ, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्या-द्वादसंगी तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता । सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

ढाळ बीजी

भक्ष्याभक्ष्य न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार॥ कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधाररे ॥ भविका, सिद्धचक्र पद वंदो ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, श्री सिद्धांते भाख्युं । ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए शिवसुख चाख्युंरे ॥भ० ॥२॥ सकल क्रियानुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहीये । तेह ज्ञान नित्य नित्य वंदीजे, ते विण कहो केम रहियेरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच ज्ञानमांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह । दीपक परे त्रीभुवन उपगारी, वळी जेम रवि शशी मेहरे ॥ भ० ॥ ॥ ४ ॥ लोक ऊर्ध्व अधो तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध । लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज शुद्धरे भ० ॥ ५ ॥

ढाळ त्रीजी

ज्ञाना वरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥

जिनेश्वर उपदेशे ॥१ ॥ पछी " ॐ ह्रीँ परमात्मने नम ज्ञान- पदेभ्य' कलश यजामहे स्वाहा ॥

ए मत्र बोलीने ज्ञाननी फरती कलशथी धारावाडी देवी पछी वासक्षेप-रुपानाणु के पैसो हाथमा लइने नीचे प्रमाणे थोय कहेवी, जोन जोजन भूमि, वाणिनो विस्तार ॥ प्रभु अर्थ प्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सोय आगम सुणता॥ छेदी जे गति चार॥प्रभु वचन वखाणी, लइए भवनो पार॥१॥ वासक्षेपवडे पूजा करवी अने पछी द्रव्यपूजा करवी सोना महोर तथा रुपामहोरथी ज्ञानो यथाशक्ति पूजा करवी,

पछी नीचे प्रमाणे दुहा बोली श्रुतज्ञानना २० भेदना २० खमासमण देवा

पीठीकाना दुहा

सुखकर शखेश्वर नमी, थुणश्यु श्री श्रुतनाण । चउ मुगा श्रुत एक छे, स्वपर प्रकाशक भाण ॥ १ ॥ अभिलाप्य अनतमे, भाग रचियो जेह । गणधर देवे प्रणमीओ, आगम रयण अछेह ॥ २ ॥ इम बहुली वक्तव्यता, छ ठाण वडीया भाव । क्षमाश्रमण[1] भाष्ये[2] कह्या, गोपय सर्वि जमाव ॥३ ॥ लेशथकी श्रुत वरणवु, भेद भला तस वीश । अक्षयनिधि

१ जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे २ विशेषावश्यक भाष्यमा

तपने दिने, क्षमाश्रमण ते वीश ॥ ४ ॥ सूत्र अनत अर्थ मई, अक्षर अत्र ल्हाय। श्रुत केवली केवली परे, भाखे श्रुत परजाय ॥ ५ ॥ (प्रथम भेद) श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमो, भाव मगलने काज। पूजन अर्चन द्रव्यथी, पामो अविचल राज ॥ ६ ॥ (खमासमण दवु)

(आ छट्ठो दुहो दरेक खमासमणे कहेवो)

इग सय अडवीस स्वरतणा, तिहा अकार अढार। श्रुत पर्याय समासमें, अत्र असख्य विचार॥ा॥श्री॥श्रु०॥२॥ बत्रीश वर्ण समाय छे, एक श्लोक[1] मझार। ते माहे एक अक्षर ग्रहे, ते अक्षर श्रुत सार॥ ८ ॥श्री श्रु०॥ ३ ॥ क्षयोपशम भावे करी, बहु अक्षरनो जेह। जाणे ठाणाग आगले, ते श्रुत निधि गुणगेह॥ ९ ॥ कोडि एकावन अडलखा, अडसय एकाशी हजार। चालीश अक्षर पदतणा, कहे अनुयोग दुवार ॥ १० ॥ श्री श्रु० ॥४॥ अर्थाते इहा पण कहु, जिहा अधिकार ठराय। ते पद श्रुतने प्रणमता, ज्ञानावरणी हठाय ॥११॥ श्री श्रु० ॥५॥ अढार हजार पदे करी, अग प्रथम सुविलास। दुगुणा श्रुत बहु पद ग्रहे, ते पद श्रुत समास ॥ १२ ॥ श्री श्रु० ॥६॥ पिडप्रकृतिमा एक पदे, जाणे

---

१ श्लोक.

बहु अवदात । क्षयोपशमनी विचित्रता, तेहज श्रुत सघात ॥ १३ ॥ श्री श्रु० ॥७॥ पचोतेर भेदे करी, स्थितिबंधादि विन्यासाकम्मपयडी पयडी ग्रहे, श्रुत सघात समास ॥१४॥ श्री श्रु०॥८॥ गत्यादिक जे मार्गणा, जाणे तेहमा एक । विवरण गुणठाणादिक, तस प्रतिपत्ति विवेक ॥१५॥ श्री श्रु०॥ ९ ॥ जे वासठि मार्गणपदे, लेश्या आदे निवास । संग्रह तरतम योगथी, ते प्रतिपत्ति समास ॥ १६ ॥ श्री श्रु० ॥ १० ॥ सतपदादिक द्वारमा, जे जाणे त्रिक लोगाएक दोय द्वारे करी, श्रद्धा श्रुत अनुयोग ॥१७॥ श्री श्रु० ॥११॥ वली सतादिक नव पद, जिहा मार्गणा भास । सिद्धतणी स्तवना करे, श्रुत अनुयोग समास ॥ १८ ॥ श्री श्रु० ॥ १२ ॥ प्राभृत प्राभृत श्रुत वस्तु, पूरवना अधिकार । बुद्धि प्रबल प्रभावथी, जाणे एक अधिकार ॥ १९ ॥ श्री श्रु० ॥१३॥ प्राभृत प्राभृत श्रुत समा, प्राभिध लब्धि विशेष । बहु अधिकार इस्या ग्रहे, श्रीगणधर उपदेश ॥ २० ॥ श्री श्रु० ॥१४॥ पूरव गत वस्तु जिक, प्राभृत श्रुत ते नाम । एक प्राभृत जाणे मुनि, तास करु परिणाम ॥ २१ ॥ श्री श्रु० ॥१५॥ पूरव लब्धि प्रभावथी, प्राभृत श्रुत समास । अधिकार बहुला ग्रहे, पद अनुसार विलास ॥ २२ ॥ श्री श्रु० ॥ १६ ॥ आचारादिक

नामथी, वस्तु नाम श्रुत सार । अर्थ अनेक विधे ग्रहे, ते पिण एक अधिकार ॥ २३ ॥ श्री श्रु० ॥१७ ॥ दुगसय पणवीस वस्तु छे, चौद पूरवनी सार । जाणे तेहने वंदना, एक नामे सो वार ॥२४॥ श्री श्रु० ॥१८॥ उत्पादादि पूरव जे, सूत्र, अर्थ एक सार । विद्या मन्त्रतणो कह्यो, पूरव श्रुत भंडार ॥ २० श्री श्रु० ॥ १९ ॥ बिंदुसार लगे भणे, तेहिज पूरव समास । श्री शुभ वीरने, शासने, होजो ज्ञान प्रकाश॥ २६ ॥ श्री श्रु० । २० ।

(प्रथमना ४ पीठीकाना दुहा ६ हो दरेक भेदे कहेवानो दुहो अने ९ मो दुहो तेटला खमासमणमा न गणवा)

पछी पसली (खोबो) भरी गोपागाय सुपदपन्वी० ए स्तुति बोलीने अथवा "ज्ञान समो को धन नहीं, समता समो नहि सुख जीवित सम आशा नहीं, लोभ समो नहीं दुःख " आ दूहो बोलीने ते पसली कुंभमा नाखवी इति विधि संपूर्ण

---

४ ॥अथ श्री अक्षयनिधि तपनुं स्तवन ॥

॥ दुहा ॥

श्री शंखेश्वर शिर नमी, कहु तप फल सुविचार ॥

क्षयनिधि तप भाखीयो, प्रवचनसारउद्धार ॥ १ ॥ तप तपता अरिहा प्रभु, केवलनाणने हेत ॥नाण लही तप तपो कीयो, शिवरमणी संकेत ॥ २ ॥ तिम सुंदरी परे तप करो, अक्ष यनिधि गुणवान ॥ श्रुतकेवलीए जे रच्यो, कल्पसूत्र बहु मान ॥ ३ ॥

॥ढाळ॥ रुडीने रढीयालीरे वाला तारी वांसळीरे ॥ ए देशी ॥

जंबु भरते रे नयरी राजग्रहीरे, सधर शेठ वसे एक सार॥ गुणवंती नारीरे कठण आजीविकार, घर दारिद्रतणो भंडार ॥ सुंदरी सेवोरे, अक्षयनिधि तप भलोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुण्य संयोगेरे प्रिया गरभे फलीरे, तव तस वृत्ति चली घरबार ॥ कोइ व्यवहारीरे वणज करावतारे, वाध्यो शेठतणो व्यवहार ॥ सुंदरी० ॥ २ ॥ पूरण मासेरे जन्मी कुमारिकारे, प्रगटयो लाल विशेष निशान ॥लक्षणवंतीरे पुत्री प्रभावथीरे, राय मुणी करतो बहु मान ॥ सुंदरी० ॥ ३ ॥ पुत्रनी पहरेरे जन्म उत्सव कर्योरे, स्वजनवर्ग नोतरीया गेह। सधर शेठेरे थाप्यु सुंदरीरे, नाम महोत्सव करी धरी नेह । ॥ सुंदरी० ॥ ४ ॥ बाल स्वभावेरे रमती सुन्दरीरे, जिह जिहा भूमि खणती रमाय ॥ पूर्व पुन्येरे मणि माणेक भर्योरे

तिहां तिहां द्रव्य निधि प्रगटाय ॥ सुन्दरी० ॥ ५ । आणी आपरे तातने सुंदरीरे, तिणे ते शेठ हुओ धनवन्त ॥ यौवन जागेरे रया उर्वशीरे, देखी शेठ करे वरचिंत ॥ सुंदरी०॥६॥ शेठ समुद्रप्रियाभिध नगरमारे, कमलसिरि नारी तस पुत्त॥ श्रीदत्त नामेरे रूप कला भर्योरे, तस परणावी ते धन जुत्त॥ सुंदरी० ॥ ७ ॥ पुण्यपनोतीरे सासर सुंदरीरे, आवी सत्-सग निधि प्रगटाय ॥ पग अाुठेरे कांकरो कान्तारे, पूर्ण कल्य धन लेती जाय ॥ सुन्दरी० ॥ ८ ॥ मोसाले भाणेजीने तेडया भोजनेरे, तेहने घर पण लक्ष्मी न माय ॥ इम जिहां चालारे सा पगला ठवेरे, निधि प्रगटे सहु सुखिया थाय ॥ सुंदरी० ॥ ९ ॥ बहुने मानेरे ससरो भली परेर, राजा पण चित्त विस्मय थाय ॥ एक दिन आव्या धर्मघोष सूरिवगर, राजा प्रमुख ते वंदन जाय ॥ सुंदरी० ॥ १० ॥ सुंदरी पूछे कहो कुण कारणेरे, पग पग पामु ऋद्धि रसाल ॥ सूरि कहे साचोर पूर्व भव तें कर्योरे, अक्षयनिधि तप यई उजमाळ ॥ सुंदरी० ११ ॥

॥ढाल॥३॥ माता जसोदा तमारो कान, मही वेचना मागे दाण॥ए देशी॥ अथवा चोपाईनी देशी ॥

॥ रोटकपुर संयम अभिधान, शेठ प्रिया

गुणवान ॥ ऋजुमति तप राति रह, ज्ञान भक्ति सुख संपद लहे ॥ १ ॥ रयणावली कनकावली करे, एका वली नि-धिए उचरे ॥ पाडोशी वसु शेठे परी, सोम सुंदरी बहु मच्छर भरी ॥ २ ॥ पुण्यवती तप राती बहु, ऋजुमति प्रशसे सहु ॥ सोमसुंदरी सुणी निंदा करे, डाकणी परे छल जोती फरे ॥३॥ भुरयो ब्राह्मण बगायों ढोर, घाप्यो नाग नासतो चोर ॥ राड भाड ने मातो साढ, ए सानेथी उगरीये भांड ॥ ४ ॥ लाग्यु घर शेठ सजमतणु, सामसुन्दरी चित्त हरख्यु घणु ॥ नारी प्रभावे न बळी एक छडी, बळी एक दिन घर धाडज पडी ॥५॥ पाडोसण मन चिंते इशु पापी शेठनु न गयु किशु ॥ दवो आपने निरधन थया, त दपती सुरलोक गया ॥ ६ ॥ सोमसुंदरी सुणी मच्छर भरी, अशुभ कर्म उपार्जन करी ॥ पामी मरण सा कोइक गुणी, श्रावक सुख नवकारज सुणी ॥ ७ ॥ जितशत्रु मथु रानो राय, चउ सुत उपर बेटी थाय ॥ सर्वऋद्धि नामज तस दइ, पच धावशु मोटी थइ ॥८ शत्रु सैन्य समूहे नडयो, जितशत्रु रणयोग पडयो ॥ लुट पडी जब राजद्वार कुवरी पण नाठी तिणीवार ॥ ९ ॥ उजाति एक अटवी पडी, रवि उदये माग सिर चडी ॥ वनफल ट्रंचे वनचर थइ, यौवन

वेला निष्फळ गइ ॥ १० ॥ एक विद्याधर देखी करी, परणी सा निज मंदिर धरी ॥ तिणि वेला घर लागो गयु, सर्व ऋद्धि पगलेथी थयु ॥ ११ ॥ विद्याधरे फरी वनमा धरी, पल्लिपति एक भीले हरी ॥ त्रीजे दीन घर तेनु नस्यु नारी निंदन सहु जन भल्यु ॥ १२ ॥ सार्थवाह फर वेची तीणे, चाल्यो निज देशावर भणि ॥ पथ वच्चे लुटाणा तेह, सर्व ऋद्धि नाठी लई देह ॥ १३ ॥ वनमा सरोवर तीरे खडी, राजकुमारी कर्म नडी ॥ पुन्ये मुनि मलया गुण गेह, मीठे वयणे बोलावी तेह ॥ १४ ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ छोरी जाटडीनी ॥ ए देशी ॥

॥ छोरीरे बेटी तु तो रायनी, इ काइ उभी सरोवर पाळरे ॥ शु दुःख चिंतवे ॥ सिरदार सहूने सुख करे, महा राज मुनि एम उचरे ॥ पूर्वभव मच्छर करी, हे काइ फडी तर शाखा डालरे । सोमसुंदरी भवे ॥ सिर० ॥ म० ॥ १ ॥ तात मरण पुर लुटीयु, हे काइ पडी तु अटवी मोजाररे ॥ दु ख पामी घणु, खेचरथु, इणे भवे लह्यो॥इ काइ सुख संभोग एक वाररे, वली वनचर पशु ॥ सि० ॥ म० ॥ २ ॥ ज्ञानी गुरु वयणां सुणी, हे राजकुमारी पुछायरे ॥ गुरु चरणे नमी, आ दु खथी किम छुटीये ॥ हे कहीये करी सुपसायरे, दु ख

यन्त्रा खमी ॥ सि० ॥ म० ॥ ३ ॥ अक्षयनिधि तप निधि करो, हे ज्ञान भक्ति विस्ताररे ॥ शक्ति न गोपवी, श्रावण वदी चोथे थकी ॥ ह सवत्सरी दिन साररे, परण तप तपी ॥ सि० ॥ म० ॥४॥ चोथभक्त एकासणे, ह शक्ति तणे अनुसाररे ॥ घट अक्षत भरो, विधि शुक्लमथी आचरो ॥ हे गणशु गौय हजाररे, पडिक्कमणा करो ॥ सि० ॥ म० ॥५॥ एक वरस जघन्यथी, हे तीन वरस उक्किट्टरे ॥ इण विधि तप करो, शासन देवी कारणे ॥ हे चोथे वरस विसिट्ठरे, थको ए आदरो ॥ सि०॥ म० ॥६॥ आ भव मनोवछित फले, ह परभव ऋद्धि न मायरे ॥ हरि चक्रिपरे, इम निसुणी कुमरी तिहा॥ हे वादी गुरना पायरे, गइ ग्रामातरे ॥ सि० ॥ म० ॥ ७॥ परघर करता चाकरी, हे आजीविका निर्वाहर ॥ सुख दु खमा करे, अल्पविधिये तप तिणे कर्यो ॥हे प्रथम वरस फरि चाहरे, बीजे भल्पिर ॥ सि० म० ॥ ८ ॥ चोथे वरस तप माडता, हे काइक हुई धनतरे ॥ एक दिन आवीया, विद्याधर क्रीडा वशे ॥ ह पूरव नेह उल्लसनरे, देखी निज प्रिया ॥ सि० ॥ ॥म ॥९॥ यापी त्य अनेउर, ह सा कहे शीलव्रत सुरयरे ॥ इणि परि काया धरी, शेषायु अणसणे मरी ॥ हे खवर पुत्री तुजरे, कहु सुण सुदरी ॥ सि० ॥ म० ते ॥१०॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कोश्या वेश्या कहे रागोजा, मनोहर मन गमता ॥ ए देशी ॥

॥ निज पूर्वभव सुणी तेहजी, सुंदरी सुकुमाली ॥जाति-स्मरण नरे तेहजी ॥ सु ॥ तप फने लहो ऋद्धि रसालजी ॥ ॥ सु ॥ रुह धर्मघोप अणगारजी ॥ सु ॥ १ ॥ कहे सुंदरी सर्वे साचुजी ॥ सु० ॥ तुम ज्ञानमाहे नवी काचुजी ॥ सु० ॥ अवधिमाइ वखाण्याजी ॥ सु ॥ तेहवा में तुमने जाण्याजी ॥ सु ॥ २ ॥ सूरि वदी निज घर आवेजी ॥ सु ॥ तप अभय-निधि मडावेजी ॥ सु ॥ राजा राणी तिणि वेलाजी ॥ सु ॥ शेठ सामन सर्व मेळाजी ॥ सु ॥३॥ पग पग प्रगटे जे निधा-नजी ॥ सु ॥ कर प्रभावना बहुमानजी ॥ सु ॥ नाम सुंदरी तो रिसराणीजी ॥ सु ॥ ते तो अक्षयनिधि कहेवाणीजी ॥ ॥ सु ॥ ४ ॥ मन मोटे पूर्ण फल लीधुजी ॥ सु ॥ पचमीए पारणुं कीधुजी ॥ सु ॥ ज्ञान भक्ति महोत्सव देखीजी ॥सु॥ देवी देव हुआ अनिमेषीजी ॥ सु ॥ ५ ॥ सुख विलसता ससारजी ॥ सु ॥ हुआ सुत चउ पुत्री चारजी ॥ सु० ॥ लियो अते सयम भारजी ॥ सु० ॥ घनघाति खपाव्यां चारजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ लही केवल शिवपुर जावेजी ॥सु०॥ गुण अगुरुलघु निपजावेजी ॥ सु० ॥ अवगाहन

ताजी ॥ सु० तिहां बीजा सिद्ध अनताजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ तस फरसित देश प्रदेशेजी ॥ सु० ॥ असरुय गुणा सुविशेषेजी ॥ सु० ॥ जुओ प्रथम उपागे ठामजी ॥ सु० ॥शुभवीर कहे प्रमाणजी सु० ॥ ८ ॥

॥ढाल॥ ५ ॥ कोईलो पर्वत धुधलोरे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिणेसर गुणनीलोरे लोल, ए भाख्यो अधिकाररे ॥ सुगुणनर ॥ वरते शासन जेहनुरे लोल, एकवीस वरस हजाररे ॥ सुगुणनर । वीर जीणेसर गुणनीलोरे ॥ १ ॥ जिहा सफल जिनगुण थुणीरे लोल, दिश सफल प्रभु ध्यानरे॥ ॥ सु० ॥ जन्म सफल प्रभु दरिसणेरे लोल ॥ वाणीए सफल कानरे ॥ सु० ॥ वी ॥ २ ॥ तास परपर पाटवीरे लोल, श्रीविजयसिंह सूरीशरे ॥ सु० ॥ सत्यविजय बुध तेहनारे लोल, कपुरविजय कवि शिष्यरे ॥ सु० ॥ वी ॥ ३ ॥ क्षमाविजय गुरु तेहनारे लोल, श्रीजसविजय पन्यासरे ॥ सु० ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु नमीरे लोल, सुरत रही चउमासरे ॥सु०॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ चद्र मुनि वसु हिमकरु (१८७१) रे लोल, वरसे श्रावण मासरे ॥ सु० ॥ श्रीशुभवीरने शासनेरे लोल, होजो ज्ञानप्रकाशरे ॥ सु० ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ ए पच ढाल रसाल भक्ति पच ज्ञान आराधता ॥ काम प्रमाद क्रिया पच छडी पचमी गति साधता॥

नभ कृष्ण पचमी स्तवन रचीओ, अक्षय निधि कारणे ॥
शुभवीर ज्ञाने देवसुदरी नाचवा घरवारणे ॥१॥
इति अक्षयनिधिनप स्तवन सपूर्ण ॥

श्री अक्षयनिधि तपनु आराधन करनार सुदरीनी कथा

जबुद्वीपना भरतक्षेत्रमा राजगृही नामनी नगरीमा मवर नामे शेठ वसे छे तेने गुणवती नामे स्त्री छे, ते खरखरी गुणवतीज छे. परतु पूर्वकर्मनी विपरीततायी तेना गृहमा दरिद्रे वासो करेलो छे स्त्री भरतार महा मुश्केलीए आजीविका चलावे छे सुखना इच्छक प्राणीए धर्माराधन करवानी जरुर छे, ते शिवाय सुखसपत्तिनी प्राप्ति थइ शकती नथी

अन्यदा गुणवतीए गर्भ धारण कर्यो. गर्भना प्रभावथी, शेठनी आजीविकाना साधनो वृद्धि पाम्या बीजा वेपारीओ पोताना भागमा तेने वपार कराववा लाग्या, अने तेम करता करता शेठनो व्यापार वृद्धि पाम्यो, एटले द्रव्यनु आगमन पण वधारे वधारे थवा लाग्यु गर्भस्थिति पूर्ण थये गुणवतीने

पुत्रीनो प्रसव थयो तेनी नाळ दाटवा माटे खाडो खोदता तेमाथी निधान निकळ्यु पुत्री भाग्यशाळी गणाणी राजमंदिर सुधी ए वात पहोंची, अने राजाए पण तेने बहु मान आप्यु अर्थात् शेठने घेर वधामणी मोकली सागर शेठे पण ए भाग्यशाली पुत्रीनो जन्ममहोत्सव पुत्रनी जेवो कर्यो, अने बारमे दिवसे सगाकुटुंबीओने आमंत्रण करी जमाडीने तेमनी समक्ष पुत्रीनु सुदरी नाम स्थापन कर्यु अनुक्रमे ते बीजना चद्रनी जेम वृद्धि पामवा लागी

ते सुदरी रमता रमता ज्या ज्या जमीन खणे छे त्यां त्या सहेजे मणिमाणेक्युक्त निधान प्रगट थाय छे तेवी रीते पुष्कळ निधान प्राप्त थवाथी शेठ पण घणो द्रव्यवान् थयो, अने सर्वत्र तेनी आबरू इजत विगेरेमा वधारो थवा लाग्यो आ जगतमा द्रव्य ए एवी महत्त्वशाळी वस्तु गणाय छे के तेना वडे मनुष्यने दरेक प्रकारनी महत्ता प्राप्त थाय छे द्रव्यवान् मनुष्य विचक्षण न होय तो पण विचक्षण गणाय छे, पाचमा पुछाय छे अने ज्या जाय छे त्यां ते बहुमान पामे छे एट लुज नही पण तेनु वचन कोइ उलथतु नथी अहीं एटलु याद राखवानुं छे के द्रव्यप्राप्तिनी साथे जो अभिमाननो के दुराचरणनी प्राप्ति थइ होय छे तो तेने पूर्वोक्त लाभ मळी

शक्ता नथी, माटे द्रव्यवान् मनुष्योए ते बे प्रकारथी तद्दन दूर रहेवानु ध्यानमा राखवु

सुन्दरी अनुक्रमे यौवनावस्था पामी, एटले ते रंभा अने उर्वशी जेवी शोभवा लागी शेठना मनमा तेने जोइने वरनी चिंता उत्पन्न थइ योग्य कन्या जो योग्य वरने आपवामा आवे तो ज ते दंपती सुख मेळवी शके छे, तेथी एवी चिंता शेठने उद्भवे ए स्वाभाविक छे अने एवी अनुपम कन्याने योग्य वर मळवो मुश्केल पडे ते पण खरी वात छे परंतु एवो संयोग पूर्वकर्मने अनुसार मळी आवे छे सुंदरीनो संबंध तेज नगरमा समुद्रप्रिय नामे शेठनी कमळश्री नामनी स्त्रीथी जन्मेला श्रीदत्त नामना श्रेष्ठीपुत्र साथे थयो मोटी धामधूम साथे तेनो पाणिग्रहण महोत्सव करवामा आव्यो अने घणा द्रव्य सहित तेने सासरे वळाववामा आवी

पुण्यपनोती सुंदरी सासरे आवी के तेज वखते त्या पगना अंगुठा वडे एक कांकरो काढता निधान प्रगट थयु, सोनैयाथी भरेलो पूर्ण कलश नीकळ्यो, तेथी श्वशुर पक्षना सर्व माणसो प्रसन्न थया, अने तेनु मान आवतावेतज वृद्धि पाम्यु तेना मोसाळ पक्षवाळाए सुंदरीने जमवा माटे तेडी, एटले त्या पण निधान प्रगट्यु एम ते ज्या ज्या पगलां

छे अर्थात् जेने घेर जाय छे त्यां निधान प्रगटे छे. एटले तेने सर्वत्र मान मळवा लाग्यु राजा पण तेने बहु मान आपवा लाग्यो.

अन्यदा धर्मघोष नामना आचार्य त्यां पधार्या राजा प्रमुख सर्व लोको वंदन करवा गया सुंदरी पण पोताना कुटुंब सहित वांदवा आवी गुरुमहाराजने वांदीने सर्व योग्य स्थाने बेठा. एटले गुरुए समयोचित देशना आपी. तेमा दान शील तप ने भावरुप चार प्रकारना धर्मनो उपदेश करता तप धर्मनी विशेष व्याख्या करी 'तपना आराधन वडे कर्मनी निर्जरा थाय छे, एटलुज नहीं पण एवा अपूर्व पुण्यनो बंध थाय छे के जेथी आगामी भवे अनेक प्रकारनी सुखसंपत्ति प्राप्त थाय छे. निरोगी अने बळवान शरीरनी प्राप्ति माटे तो तप ज मुख्य साधन छे, पूर्व भवे तप करनाराओ आ भवमा अपरिमित बळवाळा, अने निरोगी थाय छे,' इत्यादि धर्मदेशना आप्या बाद सुंदरीए उभा थइने विनयपूर्वक आचार्य भगवंतने पुछयु के "हे स्वामी! में पूर्वे केवा धर्मनु आराधन कर्यु छे के जेथी आ भवमा मारे पगले पगले निधान प्रकट थाय छे?" गुरुमहाराजे कह्यु के–" पूर्व भवे ते अक्षयनिधि नामनो तप शुभ भाव पूर्वक कर्यो छे, तेना योगे आ भवमा स्थाने स्थाने

निधाननी प्राप्ति थाय छे." सुदरीए प्रार्थना करी के-" हे स्वामी ! मारा पूर्व भवनु सविस्तर वृत्तात कहो के में केवी रीते ए तपनु आराधन कर्यु हतु तेनो मने खबर पडे, जेथी आ भवमां पण हु तेनु विशेष प्रकारे आराधन करुं " गुरुमहाराज कहे के साभळ –

" खेटकपुर नामना नगरमा संयम नामना शेठ वसे छे तेने ऋजुमति नामे स्त्री छे. ते निरतर अनेक प्रकारना तप करे छे, अने ज्ञाननी पण भक्ति करे छे तथे रत्नावळी, कनकावळी, एकावळी विगेरे तप कर्या अने बीजा पण नवा नवा प्रकारना तप गुरुमहाराजने पुछी पुछीने करवा लागी. तेनु चित्त तपधर्ममां ज रक्त थयेलु छे लोको पण तनी अहनिश प्रशसा करे छे, अने तेना तपधर्मनी अनुमोदना करे छे.

हवे तेना पाडोशमां एक वसु नामे शेठ छे. तेने सोमसुदरी नामनी स्त्री छे ते धर्मथी भ्रष्ट छे, मूर्ख छे अने अभिमान तथा इर्ष्याथी भरपूर छे ऋजुमतिनी थती प्रशसा ते साभळी शकती नथी. नींदिता करे छे के 'आवी नवी स्त्री घणी हानी करे छे.' वसु कहे-

भुख्यो ब्राह्मण वगायुं ढोर, [illegible]
रांड भाड ने मातो सा[illegible], [illegible]

अन्यदा सयम शेठना घरनी नजीकमा अग्निनो उपद्रव थयो सयम शेठनु घर तेमा सपडावानी तेयारीमां ज हतु, परतु ऋजुमतिना तपना प्रभावथी तेनु काइ पण बळ्यु नहीं. आ आग लागी त्यारे सोमसुंदरी मनमा बहुज खुशी थइ के हवे सयमशेठनु घर जरुर बळी जशे, पण तेने तो काइ पण नुकशान न थयु. एटले तेनु मन निराश थइ गयु अन्यदा ते गाममा धाड पडी ते वखते पण सोमसुदरी मनमा राजी थइ के जरूर आमा सयमशेठनु घर लुटाइ जशे पण तेनुं काइ गयु नहीं धाडपाळा तेना घरमा पेठा ज नहीं आ प्रमाणे जोइने पण सोमसुंदरी निराश थइ अनुक्रमे सयमशेठ ने ऋजुमति तो धर्मनु आराधन करीने स्वर्गे गया

हवे सोमसुदरी ऋजुमतिनी अत्यत इर्ष्या करवाथी अनेक प्रकारना कर्मबधथी भारे थइ तेने परिणामे तेजभवमा तेना घरमाथी द्रव्य नाश पाम्यु, अने दरिद्रावस्था प्राप्त थइ. अनुक्रमे तेवी दुःखी स्थितिमा ते मृत्युने वश थइ परतु देव-योगे अंत समये कोइ श्रावकना मुखथी तेणे नवकार मत्र सा भळ्यो. तेना प्रभावथी ते मृत्यु पामीने मथुरा नगरीना राजा जितशत्रुनी चार पुत्र उपर पुत्री थइ. सर्वऋद्धि तेनु नाम पाड्यु पाच धावथी पळाती ते मोटी थइ. एवामा जितशत्रु

राजानी उपर कोइ शत्रु राजा चडी आव्यो तेनी साथे युद्ध करता जितशत्रु राजा मृत्यु पाम्यो, शत्रुनु सैन्य नगरमा पेठु, एटले राजलोक सर्व जेम आव्यु तेम नासवा लाग्यु राजमहेल परो शत्रु राजाए लुटी लीधो, सर्वऋद्धि त्यायी एकली भागी ते अटवीमा जवा भूली पडी आलो रात्री परिभ्रमण करता सवारे रस्ते चडो पछी वनफळ वडे आजीविका करती त्या वनमा ज वनचर थइने रही कारण के तेने अन्य कोइ आश्रयस्थान नहोतु के ज्या जइने ते आश्रय लइ शके तेनी यौवनावस्था व्यतीत थवा माडी, अने सासारिक सुखनी प्राप्ति शिवाय निष्फळ जवा लागी

अन्यदा त्या कोइ विद्याधर आव्यो, तेणे तेने रूपवती जोइने तेनी साथे पाणिग्रहण कर्यु, अने त्यायी पोताने घेर लइ गयो परतु ते दुर्भागिणीना पगलाथी ते ज दिवसे ते विद्याधरना घरमा अग्निप्रकोप थयो, तेथी तेनी सर्व ऋद्धि भस्मसात् थइ गइ विद्याधरे तेने पाछी वनमां मूकी दीधी त्या एक पल्लिपतिनी दृष्टिए पडी, एटले ते भिल्ल तेने पोतानी पाळमा लइ गयो, बीजे दिवसे तेनु घर पण अग्निमा बळी गयु एटले बधा चोर लोको आ स्त्रीनी निंदा करवा लाग्या, अने तेना माठा पगलानु माठु परिणाम ज

लाग्या पछी ते पल्लिपतिए एक सार्थवाहने त्या वेची. सार्थवाह तेने लइने चाल्यो एटले ते मार्गमा ज लुटाणो. तेनी बधी ऋद्धि चोर लोको लुटी गया, मात्र शरीर भर ज रह्यो तेणे आने तजी दीधी एटले ते एकली एक सरोवरने कीनारे निराश थइने उभी उभी पोताना पापनो पश्चात्ताप करवा लागी

एवामां भाग्ययोग एक मुनि महाराजा त्या आवी चड्या, राजपुत्री तेने पगे लागी, एटले मुनिए तेने मीठे वचने बोलावी पछी कहु के-" हे वित्से ! तु राजपुत्री छे, छता आ सरोवरने कीनारे उभी उभी शुं विचार करे छे ? तें पूर्वभवमा धर्मी जीवनो जे मत्सर कर्यो छे, तेना पापथी हुं आ भवमा राजपुत्री थवा छता तारा पितानु मरण थयु, राजमहेल लुंटायो, तारे भागवु पड्यु, वनचर थइ, दुःख पामी, तेमा खेचरे लइ जइने क्षणभर सुख आप्यु पण पाछु वनचर थवु पड्युं. आ बधो तारा पूर्वकर्मनो विपाक छे पूर्वे बांधेला पापकर्मनी शाखाओनो ए बधो विस्तार छे "

आ प्रमाणे ज्ञानी गुरुना वचनो साभळीने ते राजपुत्रीए तेमनी पासे आवीने तेमने वंदना करी पूछ्यु के-" हे भगवन् ! आ दुःखथी मारो छुटकारो शी रीते थाय ते बतावो

हुं हवे दुःख खमी खमीने अत्यंत कायर थइ गइ छु " गुरु महाराजे कह्यु के–" हे वत्से ! जो तारे आ दुःखथी छुटवु न होय अने सुखसंपत्ति प्राप्त करवी होय तो तुं अक्षयनिधि नामनो तप कर ने ज्ञाननी भक्ति कर 'श्रावण' वद ४ थी ए तप शरु करवो, ने भाद्रपद शुदि ४ ये (संवत्सरीए) पूर्ण करवो तेमा यथाशक्ति एकांतर उपवास ने एकासणु करवु अथवा १५ एकासणा करी छेल्ले (१६ मे दिवस) उपवास करवो बे टंक प्रतिक्रमण करवां, शियळ पाळवु, जिनपूजा करवी, एक कुंभ स्थापी तेने अक्षत थी भरवा, नवकार बे हजार गुणणु गणवु आनो विशेष विधि गुरुगमथी जाणी लेवो आ तप करता कोइ पण प्रकारे दोषनी शक्ति गोपवी नहीं आ तप पूर्वोक्त विधिए त्रण वर्ष पर्यंत करवो चोथे वर्षे शासनदेवीनी आराधना निमित्ते ए तप करवो आ तपनु शुभ मने आराधन करवाथी आ भवमा पण सुखसंपत्ति प्राप्त थाय छे अने परभवमां पण अक्षय ऋद्धि सिद्धि सुख सौभाग्यादि प्राप्त थाय छे "

आ प्रमाणे गुरु महाराजनां वचनो सांभळीने सुंदरीए ए तप करवानो स्वीकार कर्यो, पछी गुरुने वांदीने ग्रामांतरे गइ अने पारकी सेवा करीने पोतानी आजीविका चलाववा लागी.

एटले विधिपूर्वक ते तप शरु कर्यो, पण द्रव्यस्थिति घटु मद होवाथी यथाशक्ति कर्यो, बीजे वरस तेथी सारा रीते कर्यो, त्रीजे वरस तेथी वधारे सारी रीते कर्यो, चोथे वरस कांइक द्रव्यवान् थवाथी विशेष सारी रीते आदर्यो तेवामा केटलाएक विद्याधरो क्रीडानिमित्ते ते राजपुत्रीवाळा गामे आव्या. तेमा ते राजपुत्रीनो स्वामी विद्याधर पण हतो, तेणे पोतानी मियाने ओळखी, एटले तेणे त्याथी लइ जइने पोताना अंतःपुरमा राखी राजपुत्रीए त्या तप पूर्ण कर्यो सारी रीते शीयळ पाळ्यु अने छेवटे अणसण वडे पूर्ण करी हे सुदरी! तु आ संगरशेठनी पुत्रीपणे उत्पन्न थइ पूर्वभवे तें अक्षयनिधि तप कर्यो हतो तेना प्रभावथी आ भवमा तने पगले पगले निधान प्राप्त थाय छे. तपनो प्रभाव अचिंत्य छे."

आ प्रमाणे गुरुमहाराजे कहेलो पोतानो पूर्वभव साभळीने ईहापोह करता सुदरीने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेणे पोतानो पूर्वभव दीठो गुरु महाराजने तेणे कयु के "हे स्वामीन्! आपे जे प्रमाणे मारो पूर्वभव कह्यो ते प्रमाणे सत्य छे. में जेवा आपना वखाण साभळ्या हता तेवाज आप ज्ञानी अने चारित्रपात्र छो" आ प्रमाणे गुरुमहाराजनी स्तुति करी वांदीने ते पोताने घरे आवी पछी श्रावण वदि ४ आवतां तेणे मोटा आडबर साथे अक्षयनिधि तपनी शरुआत करी ते वखते राजा, राणा, शेठ, सामत विगेरे सर्व ते तप करवामा

सामेल थया, ते तपनी अनुष्ठान करी त्यारथी तो विशेष निधान प्रगट थवा लाग्यु, एटले ते द्रव्यनो तेणे प्रभावनादि कार्योमा वहोळे हाथे व्यय करवा माड्यो, तेनु नाम सुन्दरी हतुं ते भुलाइ गयु अने सौ तेने अक्षयनिधिना नामथी ज बोलावा ने ओळखवा लाग्या मोटा मनथी तेणे तप करीने तेनु पूर्ण फळ संपादन कर्युं भाद्रपद शुदि पंचमीने दिवसे तेणे ज्ञानभक्ति अने महोत्सव पूर्वक सौनी साथ पारणु कर्युं, देव देवीओ पण तेनी प्रशंसा करवा लाग्या, अने तेना तपनी अनुमोदना करवा लाग्या।

अनुक्रमे सांसारिक सुखभोग भोगवता सुन्दरीने चार पुत्रो ने चार पुत्री थइ, पाते संसार तजी शुद्ध चारित्र अंगीकार करी, निरतिचार पाळी, चार घातीकर्मनो क्षय करी, केवळज्ञान प्राप्त करी, अनेक जीवोना [illegible] अक्षय निधि तपनी विशेष पुष्टि करी, [illegible] थइ ने सिद्धिपदने पामी त्यां अनंत ज्ञान, अनंत [illegible] चारित्र, [illegible] वीर्य ए अनंत चतुष्टयी युक्त [illegible] एक अवगाहनामा अनंत सिद्ध [illegible] अवगाहीने रहेला ते कदना [illegible] सिद्धो [illegible] पण मनुष्यभवना शरीर [illegible] अवगाहना यावत् अक्षयस्थितिने पाई

उपर प्रमाणे अक्षयनिधि तपनो महिमा श्रवण करीने उत्तम जीवोए अवश्य ते तपनु आराधन करवु. जन्मान्तर पूर्वना अशुभ कर्मोनो क्षय करवामां तप प्रबळ साधन छे. आ तप तो ऐहिक सुखसंपत्तिने पण आपनारो छे, परंतु तेना करनारे आ तप करतां आ भव संबंधी सुखनी इच्छा बीलकुल न करवी. आशीभावे तप करवाथी तेना फळमां बहुज क्षति थइ जाय छे, तेथी आ भव संबंधी अथवा परभव संबंधी पण सांसारीक सुखनो आशा धरीने आ अथवा कोइ पण तप न करवो. प्रभाव ज एवो छे के तेनुं शुद्ध मने आराधन करनारने आ भव संबंधी पण सुखसंपत्ति प्राप्त थाय ज छे, परंतु तेनो धान्यने माटे खेती करनारने प्राप्त थता तृण (घास) ना लाभ जेवी छे. तेनु वास्तविक फळ तो जन्ममरणादि सर्व दुःख मात्रनो नाश करी अविनाशी सुखने आपवु ते छे माटे जो इच्छा करवी तो ते ज सुखनी करवी. आ वात दरेक तप करनारे खास ध्यानमां राखवी अने तप करवा मांडवो त्यारथी ज क्रोधने तो जलांजलिज दइ देवी—पासेज आववा न देवो. आटली उपदेश भूलवो नहीं इत्यलं.

इति अक्षयनिधि तप संबंधी विधि विधान स्तवन कथादि संपूर्ण.

उपर प्रमाणे अक्षयनिधि तपनो महिमा श्रवण करीने उत्तम जीवोए अवश्य ते तपनु आराधन करवा उजमाळ थवु पूर्वना अशुभ कर्मोनो क्षय करवामा ता प्रबळ साधन छे आ तप तो ऐहिक सुखसंपत्तिने पण आपनारो छे, परतु तेना कर नारे आ तप करता आ भव संबंधी सुखनी इच्छा बीलकुल न करवी. आशीभाव तप करवाथी तेना फळमां बहुज क्षति थइ जाय छे, तेथी आ भव संबंधी अथवा परभव संबंधी पण सांसारीक सुखनो आशा धरीने आ अथवा कोइ पण तप न करवो प्रभाव ज एवो छे के तेनुं शुद्ध मने आराधन करनारने आ भव भवंधी पण सुखसंपत्ति प्राप्त थाय ज छे, परतु तेनो धान्यने माटे खेती करनारने प्राप्त थता तृण (घास) ना लाभ जेवी छे तेनु वास्तविक फळ तो जन्ममरणादि सर्व दुःख मात्रनो नाश करी अविनाशी सुखने आपवु ते छे माटे जो इच्छा करवी तो ते ज सुखनी करवी. आ वात दरेक तप करनारे खास ध्यानमा राखवी अने तप करवामाटवो त्यारथी ज कौशने तो जलाजलिज दइ देवी–पासेज आववा न देवो. आटलो उपदेश भूलवो नहीं इत्यलं.

इति अक्षयनिधि तप संबधी विधि विधान स्तवन कथादि संपूर्ण.

अथ श्री वीश स्थानक तप-विधि

वीश-पदना नामो	नव कारवाळी	काउसग्ग लोगस्स	खमासमण	प्रद-क्षिणा	
नमो अरिहंताण	२०	२४	२४	२४	आ तपमां दरेक
,, सिद्धाणं	२०	१५	१५	१५	पदना वीशवीश
पवयणस्स	२०	४५	४५	४५	उपवास करी आ
,, आयरियाण	२०	३६	३६	३६	पवा जाय, एम
,, थेराणं	२०	१०	१०	०	अथेक पदनी स
,, उवज्झायाणं	२०	२५	२५	२५	रेव आली वीश
,, लोए सव्व साहूणं	२०	२७	२७	२७	पदे वीश आली पूर्ण थाय ते अथे
,, नाणस्स	२०	५	५	५	ब ओली छ महि
,, दंसणस्स	२०	६७	६७	६७	नामां छेवट पूरी
विणयस्स	२०	१०	१०	१०	करवी जाय व
,, चरित्तस्स	२०	७०	७०	७०	ळ्ले दरावप वीश
बंभवयधारिण	२०	९	९	९	ओळी पूर्ण थाय
किरियाण	२०	२५	२५	२५	वीश वीश उप
तवस्स	२०	१२	१२	१२	वास सुधी पच
,, गोयमस्स	२०	२८	२८	२८	क्क पानु आरा
,, जिणाण	२०	२०	२०	२०	धन करवु एटले
संयमधारिण	२०	१७	१७	१७	अथेक पदनु वी
अभिनव नाणस्स	२०	५१	५१	५१	श प्रमाण गणणुं का
,, सुयस्स	२०	१२	१२	१२	ढवि
,, तित्थस्स	२०	५	५	५	

वीश स्थानक तपमां खमासमण देतां बोलवाना

दुहा.

जे जे पदमा जेटला खमासमण देवाना होय त्यारे ते पदनो दुहो दरेक वखत बोलीने खमासण देवां.

(१ पहेलु) परम पंचपरमेष्ठीमा, परमेश्वर भगवान,
अरिहंतपद ॥ च्यार निक्षेपे ध्याइए, नमोनमो जिनभाण १

(२ जुं) गुण अनंत निर्मळ थया, सहज स्वरुप उजाश,
सिद्धपद अष्टकर्म मळ क्षय करीं, भये सिद्ध नमो तास २

(३ जु) भावामय औषध समी, प्रवचन अमृत दृष्टि,
प्रवचनपद. त्रिभुवन जीवने सुखस्री, जयजय प्रवचन दृष्टि ३

(४ थु) छत्रीश छत्रीशी गुणे, युग प्रधान मुणींद;
आचार्यपद जिनमत परमत जाणता, नमोनमो ते सूरींद.

(५ मुं) तजी परपरिणती रमणता, लहे निजभाव स्वरुप
थिविरपद ,थिर करता भवि लोकने,जयजय थिविर अनुप ५

(६ ठु) बोध सूक्ष्म विणु जीवने, नहोय तत्व प्रतीत,
उपाध्यायपद भणे भणावे सूत्रने, जयजय पाठक गीत ६

(७ मु.) स्याद्वाद गुण परिणम्यो, रमता समता संग,
साधु पद साधे शुद्धानदना, नमो साधु शुभ रंग. ७
(८ मु) अध्यातम ज्ञाने करी, विघटे भव भ्रम भीति;
ज्ञान पद सत्य धर्म ते ज्ञान छे, नमोनमो ज्ञाननी रीति. ८
(९ मु) लोकालोकना भाव जे, केवलि भाषित जेह,
दर्शन पद सत्य करी अवधारतो, नमो नमो दर्शन तेह ९
(१० मु) शौच गुणथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार,
विनय पद. गुण अनतनो कंदए, नमो विनय आचार १०
(११ मु) रत्न त्रयी विणु साधना, निष्फळ कही सदीव,
चारित्रप० भावरयणनु निधान छे,जयजय संजम जीव ११
(१२ मु) जिनप्रतिमा जिनमंदिरा, कंचननां करे जे जेह,
ब्रह्मचर्यपद ब्रह्मव्रतथी बहु फळ लहे,नमोनमो शीयलसुदेह १२
(१३ मु) आत्म बोध विण जे क्रिया, ते तो बालक चाल,
क्रिया पद तत्त्वारथथी धारीये, नमो क्रिया सुविशाल १३
(१४ मु) कर्म खपावे चीकणा, भाव मंगल तप जाण,
तप पद पचास लब्धि उपजे, जयजय तप गुणखाण १४
(१५ मु) छह छह तप करे पारणु, चउ नाणी गुण धाम,
गोयम पद ए सम शुभ पात्रको ,

(१६ मु) दोष अढारे क्षय गया,उपन्या गुण जस अंग;
जिन पद वैयावच्च करीये मुदा,नमोनमो जिन पद संग,१६
(१७ मु) शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इंद्रिय आशंस,
संयम पद थिर समाधि संतोषमा, जय जय संजम वंश १७
(१८ मु) ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चरित्र समकित मूल,
अभिनवज्ञान अजर अमर पद फळ लहो,जिनवर पदवीफुल१८
(१९ मु.) वक्ता श्रोता योगथी श्रुत अनुभव रस पीन,
श्रुत पद. ध्याता ध्येयनी एकता,जय जय श्रुत सुखलीन. १९
(२० मु) तीर्थ यात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज,
तीर्थ पद परमानंद विलासता, जय जय तीर्थ जहाज २०

ज्ञानपंचमी तपविधि

जो शक्ति होय तो दरेक मासनी दर पंचमी अथवा अजवाळी पांचम के छेवट कार्तिक शुदि पांचमे तो जरूर तेनुं आराधन करवुं ते दिवसे "नमो नाणस्स" ए पदनी २० नवकारवाळी गणवी, पांच अथवा एकावन लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो ने खमासमण तेटला देवां विगेरे दरेक तपनी विशेष विधि अन्य स्थळेथी जाणी लेवी.

दीवालीनु गणुं.

१ श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नमः

ए पदनी नवकारवाली वीश गणवी.

२ श्री महावीरस्वामी पारगताय नम ,, ,,

३ श्री गौतमस्वामि सर्वज्ञाय नम' ,, ,,



अथ श्री सिद्धचक (नवपद) ओळीनी विधि

पदना नामो	नवकारवाली	काउस्सगना लोगस्स	खमासमण	प्रदक्षिणा	[illegible]	भोजन कई जात
ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं	२०	१२	१२	१२	श्वेत	चोखा, प्रमुख
नमो सिद्धाणं	२०	८	८	८	रक्त	घउ प्रमुख
,, आयरियाणं	२०	३६	३६	३६	पीत	चणा, प्रमुख
,, उवज्झायाणं	२०	२५	२५	२५	नील	मग प्रमुख
,, लोए सव्वसाहूणं	२०	२७	२७	२७	कृष्ण	अडद प्रमुख
,, दसणस्स	२०	६७	६७	६७	श्वेत	चोखा, प्रमुख
नाणस्स	२०	५१	५१	५१		,,
,, चरित्तस्स	२०	७०	७०	७०		,,
तवस्स	१०	१२	१२	१२	,,	,,

आ तप आशो अने चैतरनी शुद ७ थी १५ सुधी रोज आवेलथी करवो. एम वरसमा बे वार करता साडाचार वर्षे नव ओळी पूरी करवी, अने तप मुजब क्रिया, गणणु विगेरे करवा, त्रिकाल देववदन, पूजा, पडिलेहणा, पडिक्कमणादि क्रिया करवी

नव पद आराधनमा दरेक पदे बोलवाना दुहा

(१ छु) अरिहन पद ध्यातो थको,दव्वह गुण पज्जायरे,

अरिहंतपद. भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरुपी थायरे,
वीर जिनेश्वर उपदिशे, साभळजो चित्त लाइरे,
आतम ध्याने आतमा,ऋद्धि मळे सवि आइरे वी १

(२ जु.) रुपातीत स्वभाव जे, केवळ दसण नाणीरे,
सिद्ध पद ते ध्याता निज आतमा,होय सिद्धगुण खाणीरे वी २

(३ जु.) ध्याता आचारज भला, महामन शुभ ध्यानीरे,
आचार्य पद.पच मस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे.वी ३

(४ थु) तप सज्झाए रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे;
उपाध्यायपद उपाध्याय ते आतमा,जग बधवजग भ्रातारे वी.४

(५ मु) अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि सोचेरे,
साधु पद साधु सुधा ते आतमा, शुं मूडे शुं लोचेरे वी. ५
(६ सु) शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशमे जे आवेरे;
दर्शन पद दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावेरे वी ६
(७ मु.) ज्ञानावरणी जे कर्म छे,क्षय उपशम तस थायरे,
ज्ञान पद तोहुएएहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे वी.७
(८ मुं) जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतोरे;
चारित्र पद. लेश्या शुद्ध अलंकर्यो,मोहवने नवि भमतोरे वी ८
(९ मु) इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगेरे,
तप पद तप ते एहिज आतमा,वर्ते निज गुण भोगेरे वी. ९

नवपदनुं चैत्यवदन

सकल मंगल परम कमला, केलि मंजुल मंदीर, भवकोटी संचित पापनाशन, नमोनवपदजयकरु, ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरीश वाचक, साधु दर्शन सुख कर, वरज्ञानपद चारित्र तप ए, नमोनव, ॥ २ ॥ श्रीपालराजाशरीरसाजा, सेवतां नव पद वर, जगमाही गाजा कीर्ति भाजा,

॥ ३ ॥ श्रीसीद्धचक पसाय मैंकट, आपदा नासे अर, वळी वीस्तरे सुख मनोवाछीत, नमो, ॥ ४ ॥ आंबिल नव दोन देव वदन, त्रण टंक गीरवर, बे वार पडीक्मणा पडीलेहण, नमो, ॥ ५ ॥ त्रण काळ भावे पुजीए , भवतारक तीर्थंकर, तीवगुणणु दोय हजार गणीए, नमो, ॥ ६ ॥ एम वीधी सहीत मन वचन काया, वश करी आराधीये, तप वर्ष साडा-चार नवपद, शुद्ध साधन साधीये, ॥ ७ ॥ गद फट्टपूरे शर्मपूरे, पसविमलेश्वरवर, श्रीसिद्धचक्र प्रताप जाणी, विजय विलसे सुखभर, ॥ ८ ॥

नवपदनु चैत्यवदन (बीजुं)

श्री सिद्धचक्र आराधीए, आसो चैतर मास, नवदिन नव आंबिल करी, कीजे ओळी खास, ॥ १ ॥ केसर चदन घसी घणा, कस्तुरी बरास, जुगते जीनवर पूजीया, मयणाने श्रीपाळ, ॥ २ ॥ पुजा अष्ट प्रकारनी, देववदन त्रग काळ, मत्र जपो त्रण काळने, गुणणुं तेर हजार, ॥ ३ ॥ कष्ट टल्यु उवर तणु, जपवा नवपद ध्यान, श्री श्रीपाल नरिंद थया, वाध्यो बमणोवान, ॥ ४ ॥ सातसो कोढी सुख लह्या, पाम्या निज आवास, पुण्ये मुक्ति वधु वर्या, पाम्या लील विलास, ॥५॥

माहावीरस्वामीनुं चैत्यवदन १

त्रीस वरस घरवास जास, त्रण ज्ञाने स्वामी, चउ नाणो धारोमीया, निज आतमरामी, ॥ १ ॥ बार वर्ष उपर वली, सादापद मास, घोर अभीग्रह आर्यों, किम कहिए तास, ॥ २ ॥ माधव शुदो दशमीदिने, पाम्या केवळ ज्ञान, पदम कहे महोछव कर्यो, चौविहसुर मडाण, ॥ ३ ॥ इती

चैत्यवदन, (वीजु)

त्रिस वरस केवलपणे, वीचरीया महावीर, पावापुरी पधारिया, श्रीजीन शासनवीर, ॥ १ ॥ हस्तीपाळ नृपरा यनी, रजु सभा मोझार, चर्म चोमासु त्या रह्या, लहि अभिग्रहसार, ॥२॥ काशीकौशल देशना, घणाराय अढार० स्वामी सुणी सहु आवीया, वदणने नीरधार, ॥ ३ ॥ सोळ पहोर दिधि देशना, जांणी लाभ अपार, दीधो भविहित कारणे, पीधी तेहिज पार, ॥४॥ देवसर्मा बोधन भणि, गोयम गया सुजाण, कार्तिक अमावास्या दिवसे, प्रभु पाम्या निर्वाण, ॥ ५ ॥ भाव उध्योत गयो हवे, करो द्रव्य उध्योत, इम कही राय सर्वे मली, किधि दीपक जोत ॥ ६ ॥ दीवाली

थी थइए, जगमांहे प्रसिद्ध, पद्म कहे आराधता, लहिए अविचल रद्धि. ॥ ७ ॥

अथ पर्युषणनी थोय

भो भो भव्यजना सना यदि निवे वांछा तदा पर्वण । श्रीपर्वाुपणाभिरत्य कुरुत स्वाराधन सादर ॥ द्रव्यार्चा सुमचदनै. स्तुतिभरै कृत्वा च भावार्चना । मानुष्य सफल निरत सुमहे र्हन्मतोल्लासकै ॥ १ ॥ क्रत्वामास्तीति दिग्भवाधिप यमुदिग्युग्मोपवासान् शुभान् । रम्यार्चा च विधत्त भो भवहरा तीर्थंकराणा नवा । पद्य कृत्य जिनाति मस्य चरित कर्णैश्च पीत्वा मुदा । श्री वीरस्य जनूत्सव च कुरुत सुत्कुल्ल वर्नि भोजना ॥ २ ॥ जीयाना मवन विधत्त सुधिय कृत्वाष्टमनागनत् । भाव्या निर्मल भावना भविजनै कैवल्य लक्ष्मीकृते ॥ कल्याणानि जिनस्य भो गणभृता वाद च पार्श्वप्रभो । नेम्यादतरकाणित शृणुत सन्नामेयवृत्त तथा।३। साध्वाचारमखडित पिवत सम्मोलच सूत्र श्रवै । चैत्याना परिपाटिका चनुत स्वालोचना वार्षिका ॥ जनून् क्षाम्यत

वसल च कुरुन साधर्मिकाणा मुदा । निर्नाश चतुरस्य वाट्स्तु सा सघस्य सिद्धायिका ॥ ४ ॥

श्री नेमिनाथनी स्तुती.

श्री गीरनार गीरवर सणगार, राजीमति हैडानो हार, जीनवर नेमकुमार पुरण करुणारस भंडार, उगार्या पशुआ एवार, समुद्रविजय मल्हार मोरकरे मधुराकिंगार, निवे निवे कोयलना टहुकार, सहस नमे सहकार. सहसा वनमा हुआ अणगार, प्रभुजी पाम्या कवळसार, पोहाता मुक्ति मोझार, ॥१॥ सिद्धगीरीए तीरथसार, आबु अष्टापद सुखकार, चित्र कुट वैभार सोवनगीरी सम्मेत श्रीकार, नंदीश्वर वरद्विप उदार, जीहां बावनविहार कुंडल रुचकने इक्षुकार, सास्वता असास्वता चैत्यविचार, अवर अनेक प्रकार. कुमति वयणे म भुल गमार, तीरथ भेटे लाभ अपार, भवियण भावे जुहार ॥२॥ प्रगट छठे अंगे वखाणी, द्रौपदी पांडवनी पटराणी, पुजा जीन प्रतिमानी विविधु कीधी उल्टआणी, नारद मिथ्यादृष्टि अन्नाणी, छांडयो अविरती जाणी. श्रावक कुष्नी ए सहीनाणी, समकीत आलावे आख्याणी, सातमे अंगे

वखाणी पूजनीक प्रतिमा अक्राणो, एम अनेक आगमनी
वाणी, ते सुणजो भवीप्राणी, ॥ ३ ॥ फटेकटी मेखल घुघ-
रीयाली, पाये नेपुररण झण चाली, उन्नत गीरीरखवाली
अधर याल जीस्या परवाली, कचनवान कायासुकुमाली, करले
अवाहाली वैरीने लागे विकराली, सघना विघ्न हरे उज-
माली, अवादेवी मयाली. महिमा ए दसोदिशी अजुआली,
गुरु श्रीसयविजय सभाली, दीन दीन नित्य दिवाली,
॥ ४ ॥ सपुर्ण

श्री ज्ञान पचमीनी थोय

तीर्थंकर श्रीवीरजिणदा, सिद्धारथ कुल गगन दिणदा,
त्रिशला राणीनदा. कहे ज्ञान पचमीदिन सुखकदा,
मतिश्रुतावरणीमटभरफदा, अज्ञाण कुमी मयदा दुग चउ
भेद अट्ठावीसवृदा, समकितमतिथी उल्लसे आनदा, छेदे दु
मति ददा चउद भेदे धारो श्रुत चदा, ज्ञानी दोयना पद
अर विंदा, पुजो भाव अमदा, ॥१॥ अवतरिया सविजगदा
धार, अवधिनाण सहित निरधार. पामे परम करार. माग
शिर शुदि पचमी दिनसार, श्रावण शुदि पचमी शुभसार, शु

विधि नेम अवतार. चैत्र वदि पचमी घणी श्रीकार, चद्र प्रभच्यवन मगल विस्तार, वर्त्यो जय जयकार० त्रीजा ज्ञान दर्शन भडार, देखे प्रगट द्रव्यादिक चार, पुण्य अनत अविकार, ॥ २ ॥ वैशाख वदि पचमी मन आणी, कुथुनाथ सयम गुणठाणी, थया मन पर्यवनाणी दीक्षा महोत्सव अवसर जाणी, आवे सुरपति घणी इद्राणी, वदे उलट आणी. विचरे पावन करता जग प्राणी, अप्रमत्तम गुणश्रेणी वखाणी, स्वरुप रमण सहीनाणी अप्रमादि रिद्धीववाप्राणी, नमोनाणी ते आगम वाणी, साभली लहो शिवराणी, ॥ ३ ॥ कार्तिक वदि पचमी दिन आवे, केवलज्ञान सभव जिन पावे, प्रभुता पुरण थावे, अजित सभव जिन अनत सोहावे, चैत्र शुदि पचमि मुक्ति कहावे, ज्येठ शुदि ते तिथि दावे, धर्मनाथ परमानदपद पावे, सासन सूरि पचमी वधावे, गीत सरस रउ गावे. सघ सकल भणी कुशल बनावे, ज्ञानभक्ति बहुमान जणावे, विजय लक्ष्मी सूरिपावे, ॥ ४ ॥ सपुर्ण

दीवालीनु स्तवन

साभलरे मोरि सजनी बेनी, रजनी किहा रही आव्याजीरे, ए देशी

सुर सुख भोगवि त्रीशला कुखे. रहिने जन्म लहीने जीरे, अनुक्रमे ललना सग छडि,विचर्या दिक्षाग्रहीने, प्रगटी दीवालीजीरे, पांम्या कवलज्ञान कर्म प्रजालीजीरे, ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चारनीकायना देव मलिनें, समवसरण करें सारो जीरे, तिहा सिहासने बेसी प्रभुजी, धर्म कहे बहु प्यारो, प्र ॥ २ ॥ अनादिमिथ्याति जीव भव्य, करण त्रण्य करीने जीरे; अतर करणे आदि समये, सुख लहें समकीत धरीनें, प्र ॥ ३ ॥ ते शुद्ध दर्शन आत्मा कहीए, सेस बीजा हवे सुणीएजीरे, कषाय योगद्रव्य उपयोग, वीर्य ज्ञान चारित्र भणीए, प्र ॥ ४ ॥ एहवें इद्र भूति जस सुणीने, आव्या प्रभुनें पासेंजीरे, वेदना अर्थ सुणीने साचा, सजम लियो उलासें, प्र ॥ ५ ॥ वीरना गणधर थया इग्यार, साधु चौद हजारजीर, छत्रीश सहसते सात्वी जाणो, चरण करण सु विचार, प्र. ॥ ६ ॥ लाखने ओगणसाठ हजार, श्रावक बहु श्रीकारजीरे,सहस अढारने त्रणज लाख, श्रावीकानो परिवार, प्र ॥ ७ ॥ इम ए सघली थापना करता आव्या अपापा

गामजीरे, हस्तिपाल इर्ले इम बोले; मुज घर आव्या साम, प्र. ॥ ८ ॥ अल्प आयु पोतानु जाणी, अनुकंपा आणी नायजीरे, सोळ महरनी देशना दीधी, मल्लीया अढार नर-नाथ, प्र. ॥ ९ ॥ कार्तिक वद अमासनी राते, वर्धमान मोक्षे पोहोताजीरे, नासी अपछरा सुरनरमलीया, पण गौतमतिहां-नौता, प्र ॥ १० ॥ वीरनिर्वाण सुर मुखथी जाणो, मोह कर्यो चकचुरजीर, केवल ज्ञानने दर्शन प्रगट्यु, गौतमने उगते सूर, प्र ॥ ११ ॥ वीर गौतम निर्वाण कवल, कल्याणीक दीन जाणीजीरे, भावद्रव्य दोय भेदें कोजे, दिवाली भवि प्राणी प्र ॥ १२ ॥ पोषहपडिकमणा जिन भक्ति, सुंदर संप करीजेजीरे, धर्मचंद्र प्रभु गुण गातां, जस कमला लीला वरीये, प्रगटी दीवालीजीरे प्र ॥ १३ ॥ संपूर्ण

पजुसणनी सज्झाय

- आज मारे मन वस्यारे, भविजन पर्व पजुसण मोहोटा। होळी बळेवने नोरता जागो ए सर्व छे खोटा ॥ आज मारे ॥ ए आंकणी ॥ चोथ छठ अठम अठाइ मास खमण पण करिए, देवगुरु आणा मन धरिए,तो भवसायर तरिए ॥ आज मारे ॥१॥ अठाइ घरनो पोसह कीजे, गुरु वाणी

पीजे, कल्पसूत्र घर पधरावीजे मारे मन उल्सी जे ॥ आज मारे ॥ २ ॥ कुंवर गयवर रथ चढावी ढोल नीशान बजडावो, कल्प सुत्र गुरु पासे राखो पूजा भावना भावो ॥ आज मारे ॥ ३ ॥ तेला घर त्रिन रडो जाणी काडिया तेरनेवारो, सवत्सरी दिन वारसा सुणी क्रोध कषायने मारो ॥ आज मारे ॥ ४ ॥ मन वचकाया ए जे कीया पाप कर्म बहु कुडा, मिच्छामी दुकड दइ करीने पडीकमणा करो रुडा ॥ आज मारे ॥ ५ ॥ सरल चित्ते आगम सभुनी जे नर नारी धरशे, कहे लघु बाळक नीतीविजयनो ते शिव लीला वरशे ॥ आज मारे ॥ ६ ॥ संपूर्ण

अथ श्री नरकारवालीनी सझाय

कहेजो चतुर नर ए कोण नारी, धरमीजनने प्यारीरे ॥ जेणे जाया बेटा सुखकारी, पण छे बाळ कुमारीरे ॥ कहेजो० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ कोइ घेर रातीने कोइ घेर लीली कोइ घेर दीसे पीळीरे, पच रंगी जे बाळकुमारी मनरजन मत वाळीरे ॥ कहेजो० ॥२॥ हैडा आगळ उभी राखी नप णाथुं वधावीरे,नारी नहीं पण मोहन गारी भोगीभरनेप्यारीरे॥ कहेजो०॥ ३॥ एक पुरुष नस अपर ठहे चार सखी शृ

तेलेरे एक वेर ऊ तेहने माये, ते तस फेड न मेलेरे, कहेजो०
॥ ४ ॥ नव नव नामे सहु कोइ माने, कहेजा अर्थ विचारीरे
॥ विनय विजय उवझायनो सेवक रुपविजय वुद्धि सारीरे
कहेजो० ॥ ५ ॥

अथ श्री अयवंती सुकुमालनु तेर ढालीयु.

दोहा

पास जीनेश्वर सेवीये, नेवोममो जीनराय ॥ विघ्न निवारण सूखकरण, नामे नव निधि थाय ॥ १ ॥ गुण गाउ रुते करी, अयवंती सुकुमाळ ॥ कान देइने सांभळो, जेम होय मगळ माळ ॥ २ ॥

ढाल (१) ली

(देशी त्रिपदोनी)

(वे कर जोडी तामरे भद्रा विनवे) ए देशी

मुनिवर आर्य सुहस्तिरे, किणहीक अवसरे नयरी उजयणी समोसर्या ए ॥ १ ॥ चरण करण व्रत धाररे, गुणमणि आगरु, बहु परिवार परिवर्या ए ॥ २ ॥ वन वाडी आरामेरे, लेइ तिहा रह्या, दोय मुनी नगरी पठावीया ए ॥ ३ ॥ थानक मागण काजरे, मुनिवर मळपता, भद्राने घेर आवीआ

ए ॥ ४ ॥ शेठाणी कहे वायरे, शिष्य तुमे कहेना, शेकाजे आव्या इहा ए ॥ ५ ॥ आर्य सुहस्तिना शिष्य रे, अमे छु श्राविका, उद्याने गुरु छे तिहा ए ॥ ६ ॥ मागुछु तुम पासरे, रहेवा स्थानक प्राशुक अमने दीजीए ए ॥ ७ ॥ वाहनशाल निशालरे, आपी भावशु, आवी इहा रहीजी ए ॥ ८ ॥ सप रिवार मुनिचाररे, आचारज तिहा, आवी सुखे रहे सदा ए ॥ ९ ॥ नलिनी गुल्म अ ययनरे, पहेलो निशासमे, भणे आचारज एकदा ए ॥ १० ॥ भद्रा सुत गुणवतरे, सुखी सुरोपम, रुपवत रत्नीयामणो ए ॥ ११ अयवती सुकुमालरे,सातमी भूमिका, पाम्यो सुख विलसे घणु ए ॥ १२ ॥ निरुपम नारी बत्रीसरे, रुप अपछरा, शशी वयणी मृगलोयणी ए ॥ १३ ॥ कहे जिन हर्ष विनोदरे परम प्रमोद शु लीलाकाडे अति घणी ए ॥ १४ ॥

दोहा.

प्रथम निशा समए मुनि, करी पडिकमणु सार आलोयण आलोचवा, कुमर सुण्यो तेणीवार ॥ १ ॥ राग रंगे भीनो रहे, अवर नहीं कोइ आज लेवो देवो मातावश्यु, कुमर वडो शिरताज ॥ २ ॥

ढाल (२) जी

(माया मोहे दक्षिण मेलाइ) ए देशी

मधुरे स्वरे मुनिवर करे, होजी सूत्रतणी सझाय ॥ श्रवणे सुपरे सांमळी, होजो आवी कुमरने दाय ॥ अयवंतीसु कुमार सुणी चितलाय ॥ १ ॥ए आकणी॥ विषय प्रमाद तजी करी, होजी तनमन रचन लगाय, ए सुख मे किहा अनुभव्या, होजी जे कहे मुनिवर राय ॥ अय० ॥२॥ कुमर करी एम सोचना, होजी बेठा ध्यान लगाय, हृदयमाही विचारता, रोमरोम उल्लसित थाय ॥ अय० ॥ ३ ॥ इम चिंतवता उपन्यु, होजी जाति स्मरण ज्ञान ॥आव्यो तिहा उतावळो, होजी धरतो मन शुभ ध्यान ॥ अय० ॥ ४ ॥ गुरुना चरण कमळ नमी, होजी बेठो मनने कोड, भगवत भद्रा सुत अछु, होजी पूछु बे करजोड ॥ अय० ॥ ५ नलिनी गुल्म विमानना, होजी तुमे सुख जाणो केम, सुरि कहे जीन वचनथी, होजी अमे जाणुछु एम ॥ अय० ॥ ६ ॥ पूरव भवे हु उपन्यो, होजी नलिनी गुल्म विमान, ते सुख सुजने सांभर्यु, होजी जाति स्मरण ज्ञान ॥ अय० ॥ ७ ॥ ते सुख कहो केम पामीए, होजी केम लहीए ते ठाम. कृपा करी सुजने कहो, होजी माहरे तेहथु काम

॥ अप० ॥ ८ ॥ ए सुख मुजने नवि गमे, होजी अपूर्व सरस विमान, खारो दरिजळ जेम गमे, होजी जेणे कीधो पयपान ॥ अप० ॥ ९ ॥ एटला दिन हुं जाणतो, होजी मे सुख लह्या श्रीकार ॥ मुज सरीखो जगकोइ नहीं, होजी सुखीयोइणे ससार ॥ अप० ॥ १० ॥ हवे में जाण्या कारमा, होजी ए सुख फळ किंपाक ॥ कहे जीन हर्ष हवे कहो, होजी किम पामु ते नाक ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

ए ससार असार छे, साचो स्वर्गनो द्वार, तिन ज्ञान घटमां वसे, सुख तणो नहीं पार ॥ १ ॥ रयण मोती तिहा झळहळे, कुंगागर धनकार, माळ मृदग दुदुभी तणा, नाटकनो नही पार ॥ २ ॥

॥ ढाळ ३ जी ॥

(तु कुळदेवी सेवी सजा) ए देशी

संयमथी सुख पामाए, जाणो तुम निरधार, कुमरजी ॥ सुर सुखनु कहेतु किशु लहीए शिव सुख सार, कुमरजी ॥ सयम ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नर सुर सुख एणे जीवडे,

पाम्या अनतीवार कुमरजो॥ नरपति सुरपति ए थयो, न लही तृप्ति लगार ॥कुमरजी॥ संयम ॥२॥ काग लिंबोळी प्रियकरे, परिहरे मीठी द्राख, सुगुरुजी ॥ नलिनी गुल्म विमाननो, मुजने छे अभिलाख, सुगुरुजी ॥ सयम० ॥ ३ ॥ ते भणी मुजथु करी मया, द्यो गुरुजी चारित्र, सुगुरुजी ॥ ढील कीसी हवे कीजीए, लीजीए व्रत सुपवित्र, सुगुरजी सयम० ॥४॥ श्री आचारज एम कहे, हजीय अछे तु बाळ ॥ कुमरजी ॥ तु लीलानो लाडणो, केळ गर्भ सुकुमाळ, कुमरजी ॥ सय-म० ५॥ दीक्षा दुकर पाळवी, पच महाव्रत भार, कुमरजी ॥ माथे मेरु उपाडवो, तरवो जळधि अपार, कुमरजी ॥ सयम० ॥६॥ मीण तणे दाते करी, लोहचणा कोण खाय ॥ कुमरजी ॥अग्नि फरस कोण सही शके, दुकर व्रत निरमाय ॥ कुमरजी ॥ सयम० ॥ ७ ॥ कुमर कहे प्रभु साभळो, दुःख विण सुख किम थाय, सुगुरुजी, अल्प दुःखे बहु सुख हुवे ॥ ते तो दु ख न गणाय, सुगुरजी ॥ सयम० ॥ ८ ॥ तप करवो अति दोहीलो, सहेवा परिसह घोर, कुमरजी ॥ कहे जीन हर्ष सुभट थइ, हणवा कर्म कठोर, कुमरजी ॥ सयम० ॥ ९ ॥

दोहा

कुमर कहे मुनिरायने, वदु बे करजोड, ॥ शूरा नरने सोहदु, झूझे रणमा होड ॥ १॥ ते माटे मुज दीजीए, संयम भार अपार ॥ कर्म खपाउ सद्गुरु, पामु भवजळ पार ॥२॥

॥ ढाळ ४ थी ॥

(कपूर होय अति उजळोरे) ए देशी करजोडी आगळ रहीर, कुमर कहे एम वाण ॥ शूराने शुं दोहिलुर, जे आगमे निज माण, मुनिसर, माहरे व्रतशुं काज ॥ मुजने होठा नवी गमे रे, ऋद्धि रमणी ए राज ॥ मुनी० ॥१॥ ए आकणी ॥ साचा करी जाण्या हतार, काचा सहु सुख एह ॥ ज्ञाननयण प्रगट्या हवेरे, हवे हु छडीश तेह ॥ मुनि० ॥२॥ दुक्करव्रत चिर पाळवारे, ते तो मे न खमाय ॥ व्रत लेइ अणसण आदरुरे, कष्ट अल्प जेम थाय मुनी० ॥ ३ ॥ जो व्रत लीए सुगुरु कहेरे, तो साभळ महाभाग, घेर जइ निज परिवारनीरे, तुतो अनुमति माग ॥ मुनि० ॥४॥ घेर आवी माता भणीरे, अयवंति सुकुमाळ॥कोमळ वयणे विनवेरे,चरणे लगाडी भाल॥ माताजी ॥ माहरे व्रत शु काम ॥ ५ ॥ अनुमति द्यो व्रत आदरुरे, आर्य सुहस्ति गुरु पास, निजजनरथर सफळो करुरे, पूरो माहारी आश ॥ माताजी० ॥ ६ ॥ मूरख नर जाणे

नहीरे, क्षण न्खेणी जाय,' काळ अचिंत्यो आवशेरे, शरण न कोइ थाय ॥ मानाजी० ॥ ७ ॥ जेम पखी पजर पड्योरे, वद दुःख निशदीश, माया पजरमा पड्यारे, तेम हु विशवा वीश ॥ मानाजी० ॥ ८ ॥ ए वचन मुज नवि गमेरे, दीठां पण न सुहाय ॥ कह जीन हर्ष अंगज भणीरे, सुखीयो कर मोरी माय ॥ मानाजी० ॥ ९ ॥

दोहा

आ काया अशाश्वती, सध्या जेवों वान अनुमति आपो मातजी, पामु अमर विमान ॥ १ ॥ केहनां छोरु कहेना वाछर, कहना मायने बाप,प्राणी जाशे एकलो, साथे पुण्यने पाप॥२॥

॥ ढाळ ५ मी ॥

(वान म काढो हो उत तणी) एदेशी. माय कहे नन्छ साभलो, वात सुणावीएसीरे॥सो वाते एक वातडी, अनुमति कोड न देसीरे ॥ माय० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ उत्त शु तु श्यो नानडा, ए शी वात मसाणीरे ॥ घर जाए जिण-मातथी, ते केम कीजे हाणीरे माय० ॥ २ ॥ केणे धुतारे भोळव्यो, के केणे भूरकी नांखीरे ॥ बोले अबळा बोलडा, दीसे छबी मुख झाखीरे ॥ माया० ॥ ३ ॥ तु निश [illegible]

मुखमा रह्यो, बीजी गात न जाणीरे ॥ चारित्र छे वच्छ दोहिलुं, दु:ख लेवु छे ताणीरे ॥ माय० ॥ ४ ॥ भूख तृषा न खमी शके, पाणी विण पळ जायरे, अरस निरस जळ भोजने, वाळवी छे निज कायरे ॥ माय० ॥ ५ ॥ इहा तो कोमळ रेशमी, सुतु सोड तळाइरे ॥ डाभ सथारो पाथरी, भूयें सूतु छे भाइरे ॥ माय० ॥ ६ ॥ आछा पहेरण पहेरवा, वाघा दिन दिन नवलारे, तिहा तो मेला कपडा, ओढवा छे नित्य पहेलारे ॥ माय० ॥ ७ ॥ माथे लोच करा ववो, रहवु मलिन सदाइरे, तप करवा अति आकरा धरवी ममता न काइरे ॥ माय० ॥ ८ ॥ कउण होए ते ए सहे, ते दुःख नें न खमायरे ॥ कहे जीन हर्ष न कीजीए, जीण वाते दुःख थायरे ॥ माय० ॥ ९ ॥

दोहा

कुमर कहे जननी सुणो, मुनि चक्रि बळदेव, सयमथी सुख पामीया, ते सुगजा सुख हेव ॥ १ ॥ अर्जुनमाळी उद्धर्यो, दृढ प्रहारी सोय, परदेशी रोहीणो, वलीयात सुमावुतोय ॥२॥ समदृष्टि हुए समकिती, सयम सुर सुख लीन ॥

कोइ तर्या नंळी तारशे, सुजमन हुओ मवीन ॥ ३ ॥ एकाम अगज माहर, तु पण आदर एम ॥ किम आपु हु अनुमति, स्नेह तुटे कह कम ॥ ४ ॥

॥ ढाळ ६ ठी ॥

(लाल रगावो वरना मोळीया ए देशी,) ,

हवे कुमर इश्यु मन चिंतव, वे मुजने कोइ नावे निसारे; जाउछु विणु अनुमते, तो गुरु पण न दीये दीसारे ॥ हव० ॥ १ ॥ ए आकुणी निज हाये केश लोचन कीयो, भलो वग जतिनो लीयो रे ॥ गृहावास तज्यो सयम भज्यो, निज मन मान्यो तेम कीयो रे ॥ हवे० ॥ २ ॥ भद्रा देखी मन चिंतवे, एतो वेष लइने बेठोरे ॥ एहने राख्यां हवे शु हुवे, जमीए मीठामणी एठोर ॥ हव० ॥ ३ ॥ वच्छ सामळ व ए शु कीयो, मुज आश्र लता उन्मूळीरे ॥ तुज मुख देखी सुख पामती, दइ जाय छे तु मनी शूळीरे ॥ हव० ॥ ४ ॥ तुज नारी बत्रीसे बापडी, अरळाने जोवनवतीरे ॥ झुरती रहती निशदिने, तुज मुख सामु निरखतीरे ॥ हवे० ॥ ५ ॥ रगे रहेती ताहरे मन उपरे, तुज वयण कदी नवी लोपतीरे अवगुण पाखे ए नारी शु, कहने शा माटे छोडीरे ॥

॥ ६ ॥ ए दु ख राम्यु जाशे नहीं ॥ पण जोर नहीं तुज क- हेरे ॥ जीन हर्षभद्रा नारी मली, आखडीए आसु रेडे रे॥७॥

॥ दोहा ॥

बत्रीसे नारी मली, कहे पिघुने सुविचार ॥ वय लघुता रुपे भला, शो सयमनो भार॥ १ ॥ तन छे करवत सारीखा, मनछे पवन समान॥बावीशे परिसह सह, वचन अमारो मान ॥ २ ॥ मयगळ नीकळ्या, ते केम पाछा जाय ॥ करम सुभट दूरे करी, महोचसु शिवपुर ठाय ॥ ३ ॥

॥ ढाळ ७ मी ॥

(घरे आवोजी आंबो मोरीयो ए देशी)

अनुमति दीधी माये रोवता, तुजने थाओ कोड कल्याणरे ॥ सफळ थाओ तुज आशडी, सयम चढजो सु प्रमाणरे ॥ अनु० ॥ १ ॥ ए आज्ञणी कुमरतणा वछित फल्या, हर्ष्यो निज चित्त मझाररे ॥ आव्यो गुरु पासे उमह्यो, साथे परिवार अपाररे ॥ अनु० ॥ २ ॥ सद्गुरुना चरण कमळ नमी, भासे करजोडी कुमारोरे, भवदण सम गुरु मुज भणी, ससार समुद्रथी तारोरे, ॥ अनु० ॥ ३ ॥ आचार जे उच्चरावीया, व्रतपच विधे सहु सारेरे ॥ पन धन एस जेमे सुख तज्या,

नर नारी मळी एम भाखेरे, ॥ अनु० ॥ ४ ॥ भद्रा कहे आचारज भणी, तुमने कहुं छु कर जोडरे ॥ जाळवजो एने सी परे, मुज काळजडानी कोरे॥ अनु० ॥ ५ ॥ तप करता एन वारजो, भूख्यानी करजो सारोरे ॥ जनमारे दु ख जाण्युं नथी, अहमिंद्रतणो अवतारो रे ॥ अनु० ॥ ६ ॥ माहरे आंगी पोथी ए हती, दीधी छे तुमने हाथ रे ॥ हवे जिम जाणो तेम जाणजो, वहाली माहरी ए आथ र ॥ अनु० ॥ ७ ॥ साभळ सुत जोवतआदर्युं, तो पाळजे निरतिचारो॥ दूषणमल्गाडीश व्रत भणी, तु जेम पामे भवपार रे ॥ अनु० ॥ ८ ॥ धन्य गुरु जेहनोए शिष्य थयो, धन्य मात पिता कुळ जासरे ॥ जेहने कुळ ए सुत उपयो, इम बोलावी वस वाद रे ॥ अनु० ॥ ९ ॥ एम कही भद्रा पाछी वळी, दुःखणी बहुभरा छेड्र सायरे ॥ जिन हर्ष अल्प जळ माछली, घेर आवी थइ छे अनाथरे ॥ अनु० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

घेर आवी मासु वहु, मन मान्यो उदास ॥ शीतक वीण मंदिर फीकों, विण जिण सोनीरास ॥ १
पलक न रहि सकु, सेवक संग सुम [illegible]॥
तळफ तळफ [illegible]

॥ ढाळ ८ मी.

(माहणानी देशी)

सदगुरजी हो कहु तुमने करजोड, चिर चारित्र पळ नही ॥ सद् गुरजी हो॥तप किया नव थाय, कर्म खपे जेहथी सही ॥ १ ॥ स० ॥ तुमची अनुमति थाय, तो हुं अणसण आदर ॥ म० ॥ थोडा काळ मझार, कष्ट करी शिवपद वर ॥ २ ॥ मुनिवरजी हो ॥ जेमसुखथायेतुज, तेमकरो देवाणु पिया ॥ मुनि० ॥ गुरुने चरणे लागी, सहु शुं खाम णहा कीधा ॥ ३ ॥ मुनि० ॥ आव्यो जिहा मसान, वळे मृतक वहि धगधगे ॥ मुनि० ॥ निहाळतो विकराळ, दखतां मन ऊभगे ॥ ४ ॥ मुनि० ॥ विरुवन इगे नामे, टोसे यमवन सारिखो ॥ मुनि० ॥ व्याडाळा विहा रुख, कु कथेरी सारिखो ॥ ५ ॥ मुनि० ॥ आव्यो तिण वन माह, तिहा आवी अणसण कर्यु ॥ मुनि० ॥ काने विंधाणा पाय, ततक्षण लाही जर, हर्यु ॥ ॥ ६ ॥मुनि०॥ पग पींडी परनाळ, लोही पासस उद्य हो ॥ मुनि० सौभाग सुकुमाळ, कठण परिसह आदर्यो ॥ ७ ॥ मुनि० शरस्तव तिणीवार, कीधो अरिहत सिद्धने॥ मुनि० ॥धर्म चारज ध्यान, धर्यु जिन हर्षे भले मने ॥ मुनि० ॥ ८

॥ दोहा ॥

वन आवी गोरडी, प्रात समय गुरु पास ॥ गजसुकुमाल मुनि वदे, नाह न दीसे नास ॥ १ ॥ मुनि कहे अनुमति ग्रही, काउसग्ग रह्यो स्मशान ॥ मन इच्छा वर पामीया पोह्या देव विमान ॥ २ ॥

॥ ढाळ ९ मी ॥

(पोवीडा तु धोजे मननु धोतीयु रे) ए देशी

तिण अवसर एक आवी जनुकीरे, साथे लेइ पोतानां बाळरे ॥ भक्ष करवाने दशदिशे फरेरे, अवळी सवळी ..... चालरे, ॥ तिण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चरण ..... आवी वासनारे, बाळ सहित आवी वन माहरे ॥ ..... सभारी शोधतीरे, खावा लागी पग शुं साहिरे ॥ ... ॥ २ ॥ चटचट चूंटे दाते चामडीर, गटगट खाये लोही ..... घटघट चर्मतणां घटका भरे रे, तटतट त्रोडे नाडी नसो ... तिण० ॥ ३ ॥ प्रथम प्रहरे ते जनुक जनुकीरे, एक ..... भक्षण कीधरे, तोपण ते वेदनाए रुध्यो ..... बीजो पग लोध रे ॥ तिण० ..... गोदीनेरे, पण ते न करे ..... अशाश्वतीरे

महर पेट दिदारीयुरे, जाणे कर्म विदारीयाएणरे, चोथे महरे माण तजी करीर, नल्निगुल्म लह्या सुख तेणरे ॥ तिण० ॥
॥ ६ ॥ सुरवदीने तास शरीरनोरे, महिमा करे अनेक मका-रे एह जीन हर्षे तेणे अवसर मळीरे, वदण आवी सघली नाररे ॥ तिण ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

गोरी सवि शास्ता थइ, आवी नगरी मझार ॥ सुख कमळाणु मालती, सासु देखे तेणीवार ॥ १ ॥ कुळमा कोळा-हळ थया, मंदिर खाराधाय, वन भोगी जोगी हुए, करम करे ते थाय ॥ २ ॥

॥ ढाळ १० मी ॥

(भणे देवकी केणे भोळव्या) ए देशी.

वांदी पूछे गुरुमणी, अमचो दिसे नहि भरतार, ॥ पुज्यजी ॥ किहा गयो मुनि ते कहो, उपयोगे कहे तेणी वार ॥ कामीनी ॥ वादी० ॥ १ ॥ ए आरुणी आव्या हता पहोत्या निर्हा, दु ख पामी मरण सुगेय ॥ कामिनी ॥ हा हा करे धरणी ढळे, आसुडा छुटया नयणेय, ॥कामिनी॥वादी०॥
॥ २ ॥ हीयडु पीटे हाथ शु,उपाडे शिरना कश, ॥कामीनी॥ विलखे पिपुविण पत्नीयो, मरस्नेही पामे क्लेश, ॥ कामिनी ॥

॥ ढाळ ११ मी ॥

(देखो गति दैवनीरे, अथवा गजराजनी) ए देशी

दुःखभर वरीसे रोजनीरे, गदगद बोले वचन ॥ परलोके पोंत्या सहारे, साधु तुम पुन रतन ॥ देजो मुने मुजरोरे,अरे सासुना जाया, अरे नणदीना वीरा, अरे अमुलक हीरा, अरे मन मोहन मारा, अरे प्रीतम प्यारा॥ देजो मने मुजरोरे ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ भद्रा सुणी दुःखणी थइरे,पुन मर णनी रात चार पहोर दुःख निर्गमीरे, पहोती तेणे वन परभात ॥ देजो० ॥२॥ कथेरी वन दुस्तर, पुत्र कलेवर दीठ॥ नारी माय रोइ पडीरे ॥ नयणे जळधारा नीठ ॥ देजो०॥३॥ हीयडा फाटे का नहीरे, जीवी काइ करेश ॥ अतरजामी वाल्होरे, ते तो पा गो परदेश ॥ देजो० ॥ ४ ॥ हीयडा तु निठुर थयुरे ॥ पहाण जइयु क ल्होइ ॥ फीट पापी फाटयु नहीरे ॥ वहाला तणे विच्छोहे ॥ देजो० ॥ ५ ॥ हीयडु इणु धटारीएरे, धुळ अगारे देह ॥ साभलता फाटयु नहीरे, नो खोटो वाहरो नेह ॥ देजो० ॥ ६ ॥ इणीपरे झूरे गोरडीरे, निमुही जु झूरे माय, ॥ पियु पियु मुखथा करी रहीरे, बापडा झुर जोम जाय ॥ देजो० ॥ ७ ॥ दुःखभर सायर उछळयारे, छाती मां न ॥ प्रेत कारज सुतनु कियुरे, जिन हर्ष हिये अकळाय ॥ देजो० ॥ ८ ॥

ळार, नावे निखरी जाय, ॥ मोरी० ॥ ५ ॥ सुपन माहे जेम राकडोरे, धनपामीहुओहोड ॥ जागी निद्रा ठीकरे, भाग्यु माया हेठ ॥ मोरी० ॥ ६ ॥ स्वप्न जेम अशाश्वता रे, सहु देखाय छे एह ॥ कहे जीन हर्ष वैरागीयारे, साम्र सहुअर तेह ॥ मोरी० ॥ ७ ॥

॥ ढाळ १३ मी. ॥

(सुण बहनी पीयुडो परदेशी ए देशी)

भद्रा घर आवी एम भारे, गर्भवती घर राखेरे ।अन्य वधु पहोती गुरु पासे, व्रत अमृत रस चाखेरे ॥भद्रा० ॥१॥ ए आंकणी ॥ पचमहाव्रत शुद्ध पाळे दूषण मनका टाळेरे॥ दुक्कर तप करी काया गाळे,कलिमल पाप पखाळेरे ॥भद्रा०॥ ॥२॥ अतकाळे सहु अणसण लेइ, तजी औदारिक देहीरे ॥ देवलोकना सुख ते लेइ, चारित्रना फळ एहीरे. ॥ भद्रा० ॥ ॥ ३ ॥ कहे गर्भवती सुत जायो, देवळ तेणे कराय़ोरे ॥ पितामरणने ठामे सुहायो, अवन्ती पास कहायोरे. ॥भद्रा०॥ ॥ ४ ॥ पापमजीणेसरमनिपायापी, कुमति लता जड कापीरे॥ किर्ति तेहनी त्रिभुवन व्यापी, सुरज जेम प्रतापीरे ॥ भद्रा०॥ ॥ ५ ॥ सवत सचर एकनाळीसे, शुकल आशाढ वहीशेरे ॥ चार धनीघर आठम दिवसे, कीधी सझाय जगीशेरे ॥भद्रा॥-

॥६॥ अयवती सुकुमार मलावे, मधुर स्वरे गुण गावे, ...जीन हर्ष दाधे वद्दावे, शांति हर्ष सुख पावे ॥...॥
॥ [illegible] ॥

श्री नेमीनाथनो चोक पहेलो

(लावणी राग)

श्री नेमनिरंजन बालपणे ब्रह्मचारी [illegible] ...द अतुल बलधारी, टेक, [illegible] ...ाला, रसरंगेआवेयदुपतिआयुधशाला, [illegible] ...मु एछे शरवउदार, नही गीरधर [illegible] ...रकमले लेकर नाद बजायो भारी, ॥ [illegible] ॥ मुणि ...ड चन्दनीध्वना अति विकराल, [illegible] शेषफणी ...ल पाताल, चित्त चमक्या मनमे [illegible], धर हर ...कंप्या व्यंतर पति [illegible], [illegible] सुर नारी, ॥ प्रभु ॥ २ ॥ [illegible] मोटा, मोटी ...वनने नाठा गजरथ घोडा, [illegible] निर चढ्या ...कल्लोल, भांगी [illegible], [illegible] ...विहार जहुकि नारी ॥ प्रभ ॥ ३ ॥ [illegible] सुरज तारा ...नीकना स्वामी. [illegible] अंतरजामी, ...चक्र [illegible], [illegible] ...नेमकुमार, [illegible] मोरारी

पायक अदनालीशसो कोड आगळ चाले, मन्नी टसें न्गारग इन्परजी हरि जोडे, ॥ मभु ॥ १ ॥ वाने थराङ्ग फरे शरि निसाण, पडुसाजन महाक्षन जोर घणावी जान, इम करता मभुजी उग्रसेन घेर आवे, देखी मुरत मभुनुं राजुल मन सुख पावे, तन करता पशु पोकार सांभळो कोड, मभु ॥२॥ छोडाविं पशुनो शुद्र रथडो वाले, घेर आवी मभुजी दान सवत्सरी आले, सुणी वातने राजुल मुरछा धरणी ढळति, हे नाथ श्रु विधु कोदि निराश एम करति, लेइ सजम दयति करम कठिनने तोडे ॥ मभु ॥ ३ ॥ वेहु पामि केवल ज्ञान मुगते जावे, मभु धीन वधु अजरामर पदवि पावे, गुरुरूप कीर्त्ति गुण गाता रगसवाया, चोमासु रहि मेसाणे मभु गुण गाया, माणेक मुनि गावे लावणी मनने कोडे, मभु ॥ ४ ॥

॥ गहुली १ ली ॥

श्री थभणपुरमां वस्यारे, श्री थभण जीन पास सनेही. भणमी पदपज पासनारे,गुण गाता मन आस॥स ॥१॥ श्रेष्टी स्तभनपुर तणा भेमचन्दरे,शुभ नाम॥स ॥तस सुत रत्न सोभागीयारे,अमरचद्र गुणधाम॥स ॥२॥ श्रीजीनवर गुरु धर्ममारे, जेनु मन अहनीस ॥ ३.॥ न्यायनिपुण नीति मार्गमार. विचरे जे नीसदीस॥स ॥३॥वसपुत्र कल्पतरु समारे,पुत्र पाच अभि-

राम॥स ॥पोपटभाइ प्रथम थयार,सत्त्वादि गुणना॥म॥स ॥४॥ आवुसम्मेतने सिद्धगिरीरे, केसरिया गिरनार॥स ॥ इत्यादिक श्रु तीर्थनारे,फाल्या सघ उदार॥स.॥५॥ श्रीचिंतामणि पास पुर, नाम रच्यु अभिराम॥स ॥प्रण्य शिखरथी शोभतुर,भवि जनने विश्राम॥स ॥६॥ राज्यचद्र मन ए ममेरे, फेलातो पुर माहि॥स ॥नयव्यवहार उन्नेत्नोर,स्थळ कल्पितज्याहि॥स ॥ ॥७॥ सत्य धरमना रागथीरे अन्न करी व्यवहार॥स ॥भद्रिक जीवने उद्धर्यारे,ए उपकार अपार॥म ॥८॥ एम अनेक सुकृत कर्योरे, जगमा जश बहु लीध॥स ॥च कहे एवा नरोरे, होजो जगत प्रसिद्ध ॥ सनेही ॥ ९ ॥

॥ गहुली २ जी ॥

साभळजो सखी सुगुण सुनीना,सद्गुणनी शुभ वातोरे ॥ नानी वयमा नेह धरमनो, ए अचरिज मन थातोरे ॥ साभ-ळजो० ॥ ए आफणी अमरचद्र सुत छगनभाइते, पोपटचद्रना भ्रातारे, पिता तणा पंथे पळनारा,धर्म कर्ममां रातारे॥ साभ-ळजो० ॥ १ ॥ धर्मपत्नि तस सद्गुणने वश. मणी बेन जस-नामरे, तेमनी पुत्री परम पवित्री, हीराकुवर अभिराम २ ॥ सांभळजो० ॥ २ ॥ विनय विवेकी निर्मळ नेत्री, हीरा हीरा सरखी रे. लघु वयमा [illegible]

॥ साभळजो० ॥ ३ ॥ सवत ओगणीसे अगनोत्तर, कातिक नी छठ काळीरे, जन्म धरे दुःख विसरे सर्वे, मात पिताने दिवाळीरे ॥ साभळजो० ॥ ४ ॥ सवत ओगणीसे अेंसीमा, वर्षाकाळ निवासीरे, श्री गुरुणी सौभाग्य श्रीजीए, विधि घट व्रतनी भासी रे ॥ साभळजो० ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी चोथे व्रतमा, अक्षय तप आदरीयोरे, वय अगीआर वरसनी सोपण, भाव भलो मन धरीओरे ॥साभळजो० ॥६॥ पण गतिकाळनी गहन कही ते, मिथ्यादर्शनवयावेर, दश दिवस लघु तपमा रहीने, हीरा स्वर्गे सिधावे रे ॥ साभळजो० ॥ ७ ॥ एवा गुण व्रतनी अभिलासी, धर्मनीतिनी वासीरे, पुनी रत्न होजो सहुने कहे, चद्र सिनोर निवासीरे ॥ ८ ॥

श्री कल्पसूत्रनी गुहली त्रीजी

सहीयर सुणीयेरे भगवती सूत्रनी वाणी–ए देशी

भवियण सुणजोरे, कल्पसूत्रनी वाणी, मीठी लागे वाणी अमीय समाणी ॥ए आकणी॥ कल्पसूत्रनो मोटो महीमा वीर जिणद वखाणे, गौतम गणधर वीर वचनने, हृदय कम-ळमा धारे, भवि ॥ १ ॥ अरिहत समनहीदेवजगतमे, पदमे परम पद मोटु, तीरथमे शत्रुजय जाणो, सूत्रमे कल्प वखाणो, भवि० ॥ २ ॥ देव गणोमें इद्र छे मोटा, तारा गण में चद्र, न्याय नीतिमे राम वखाणो, काम स्वरुपमें जाणो,

भवि० ॥ ३ ॥ रूपवंतीमे रही रंभा, वाजींत्रमे जेम भंभा, गजवरमे ऐरावण पहीए, युद्धमे रावण ल्हहिए, भवि० ॥४॥ बाणावलीमे अर्जुन वलियो, गुणमे विनय च्यु भणीयो, मत्र-मांही नवकारज जाणो, बुद्धिमे अभय गवायो, भवि० ॥५॥ सव वृक्षमे कल्पवृक्ष जेम, अधिक वडाइ धारे, सर्व सूत्रमे क-ल्पसूत्र तेम, पाप कलंक निवारे, भवि० ॥ ६ ॥ कल्पसूत्र जे भणशे गणशे, तिसत्तवार सांभलशें, धीर कहे साभलजो गौ-तम, ते भवसायर तरशें, भवि० ॥ ७ ॥ निधि रस निधि इंदु वत्सरमे, रही सीनोर चौमासु, वीरविजय कहे वीर प्र-भुनी, वाणीमे नहि काचु, भवि० ॥ ८ ॥

पजुसण पर्वनी गुहुली चोथी.

सजनी मोरी पर्व पजुसण आव्यारे, स० भव्य जीवमन भाव्यारे, स० धीपनन्दीसरे जावरे, स० देव अट्ठाइ मनावेरे ॥ १ ॥ स० जीवा भिगमनो पाठरे, स० करे विविध पणे ठाठरे, स० गामनगरनरनारीरे स० निजशक्ति अनु-सारेरे ॥ २ ॥ स० दान शियल तप भावरे, स० भव जळ तारण नावरे, स० पूजा प्रभावना थायरे, स० मनमे हर्ष न मायरे ॥ ३ ॥ स० साधु रहे चउमासरे, स० सफल थइ-मन आसरे, स० लोच करे मुनि राजरे, स० अभ्यंतर गुण

फाजरे. ॥ ४ ॥ स० सोहागण वदे नाथरे, स० एऊज धर्म ऊे साथरे, स० कल्प ग्रे पधरावोरे, स० लेइ्र जन्मनो लहावोरे, ॥ ५ ॥ स० साडत्ररगुरुपासेरे, स० आविये अति उल्लासरे, स० ज्ञान भक्ति शुभ कीजेरे, स० गुरु हस्ते कल्प दीजेरे, ॥ ६ ॥ स० कीजे अर्ज करजोडीरे, स० सभलावो धर्म तोडीर, स० सुत्र कल्प व्याख्यानरे, स० सुणिये अमिय समानरे, ॥ ७ ॥ स० धर्म सारथी जाणोरे, स० श्री देवी स्वप्न वखाणोरे, स० मोरी, स्वप्न पाठक बोलावोरे, स० जन्म श्री वीरनो थावेरे, ॥ ८ ॥ स० मझुए दीक्षा धारीरे, स० मोक्ष गये धर्म जारीरे, स० श्री आदिनाथ वखाणरे, स० पटावली ऊे प्रमाणरे ॥ ९ ॥ स० मोरी, सामाचारी प्रधानरे, स० बारसोनवख्यारयानरे, स० सवत्सरि पडिकमियेरे, स० सर्वोपराधने खमियेरे, ॥ १० ॥ स० आतम आनद भरियेरे, स० शिवलक्ष्मी हर्षे वरियेरे, स० व छभ धर्म मनावोरे, स० आतम हर्ष वधावोरे ॥ ११ ॥

मिथ्यात्व पर्वनी गहुली १ ली

सुण साहेली मिथ्यापर्वतुकरवाछोडीदेने, वेनी छोडी देता दु ख जाये, सुख थाये आपण सहुने, सुण साहेली ॥ ए आकणी ॥ बोल बोध वाइ आने आवो, घी घेंस तणु

हु तो लावी, घउलानी नातो सामलीये घहुनेतोतेन्नि नवी अहिये, सुण साहली ॥ १ ॥ वेनी नायनणी पचमी पहीये, नाई रसी आपणे ननि रहिये, नहितो नाग नीरन्वे निरवालो, शु तरसे जे मारा वाल्ले, सुण साहेली ॥ २ ॥ रावण छठ्ठतो आवी पोची, पुरीपरमुळीलावोथोथी, पकानरसरहुएनचित्ते, वलीशान्नरनवनगीरीने, सुण साहेली. ॥ ३ ॥ शील सातम टीन वाशी खावु, शीतला माता दर्शने जावु, टार्या ऊ चूलेम आवे, शीतलाने आलो-टवा पाजे, सुण साहली ॥ ४ ॥ वगी श्राद्ध दिवस ज्यारे आवे, फारा कही कागने बोलावे, ब्राह्मणने तेडी घेर लावे, भली रसवती मोपे भावे ॥ सुण साहली ॥५॥ वर्वी लौकिक करणीने करती, उपदेश करे घरे घेर फरती, इम जन वहुलाने भरमावे, ते धोथी वीकने कम पावे॥ सुण साहेली ॥ ६ ॥ जे मिथ्या दृष्टि मन धरसो, जे मिथ्या पर्वोने आन्रसे, चउगति ससारमा रडवडसे, ती भवसायरथी नेम तरसे॥ सुण साहेली. ॥ ७ ॥ वेनी जैन धर्मने पामीजे, तेना पर्व घणा एम जाणी जे, जे कल्पवृक्ष मनमा भाव, ते आक धतुर पासे नवी जावे॥ सुण साहली ॥ ८ ॥ एवी लौकिक करणीने छोडी, दया धर्म करो सर्म मद मोडी, जेथी भवसिन्धु सहेजे तरसो, तमे शिवरमणी झट पट वरसो ॥ सुण ॥ ९ ॥

गहुली २ जी

जीरे मिथ्यात्व पर्वने परिहरो, जिरे मिथ्यात्व पापनु मूळरे, गुणवती बेनी मिथ्यात्व पर्वने परिहरो ॥ १ ॥ जीरे मिथ्यात्व पर्वे नही आपदा, जीरे मिथ्या चे सुख तणी हाणरे॥ गुणवती० ॥ २ ॥ जीरे मिथ्यात्वथी नर बहु भमे, जीरे मिथ्यात्व नरकनु द्वाररे गुण० ॥ ३ ॥ जीरे मिथ्यात्व निमिचे परिहरो, जीरे मेवा मीठाइना थालरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ जीरे वाशी अन्न न राखीये, जीरे थाय बेइन्द्री तणी हाणरे॥गुण० ॥ ५ ॥ जीरे शीतलापूजेसिद्धिनवीमले, जीरे प्रभु पूजे मुक्ति पमायरे ॥ गुण० ॥६॥ जीरे टद्धपरपरावारीने, जीरे जाणीये गुरु मुख भेदरे, गुण० ॥ ७ ॥ जीरे दीसे लइ कुने कापडो, जीरे शास्त्रो तणा जुवो पाठरे, गुण० ॥८॥ जीरे मिथ्यात्वथी कोण पामीया, जीरे उंच गति तणा ठामरे ॥ गुण० ॥ ९ ॥ जीरे मिथ्यात्वे समक्ति नवि रहे, जीरे थाये शिव सुख हाणरे, गुण० ॥ १० ॥ जीरे व्हाला मळी सहु विनने, जीरे नव पडिये मिथ्यात्वीना फदरे, गुणवती ॥११॥

॥ गहुली ३ जी ॥

सखी शील सातम दान थाज, मनमा धरजोरे माता शीरतारेर पूजन, तमेपरिहरजोरे ॥ १ ॥ नथी जैनतणी

ए रीन, तत्त्व विचारोरे ॥ तजी मिथ्यात्व शुभ चित, कलक निवारोरे ॥ २ ॥ गुरुमुखेमुणिजीनवाण, चित्त नवी धाररे ॥ गृही मिथ्यादृद्ध विवाद, जन्म वधारेरे ॥ ३ ॥ नथी थाले कहियेराग, गीतल्लाने पूजोरे, प्रभु त्रिभुवन तिलकसमान, जगमा न दुजोरे ॥ ४ ॥ करो प्रभु सेवा धरी चित्त, निर्मल थइरे ॥ लइ सामग्री भक्तिभाव, देहरे जईयेरे ॥ ५ ॥ विमलजलकल्शहाथ, न्हावणकरावोरे ॥ घसी चदन माहि बरास, प्रभुने चढावोरे ॥ ६ ॥ सुधी सुगधी फूल माल, जिन कठे ठावोर ॥ धूप धाणुं करो हितकाज, कर्मने बालोरे ॥ ७ ॥ करो दीपक पूजा रसाल, केवल लहीयेरे ॥ गृही अक्षत उज्वलसार, स्वस्तिक करीयेरे ॥ ८ ॥ नेवेद्य भरि सोना थाल, प्रभु पासे रहीयेर ॥ द्रव्यभावथी भावना भाव, पापने हरियेरे ॥ ९ ॥ उत्तम जाति फल लावी, प्रभु आगे धरीयेरे ॥ फल्थी मागो फल सार, विनति करीयेरे ॥ ॥ १० ॥ टाले जे लौकिक मिथ्यात्व, याचो ऊँ मेदेरे॥ लेवा शिवरमणीराज्य, गुरु गुण गावरे ॥ ११ ॥

॥ प्रभुजीने पोंखणा वखते ढाल. ॥

जीरे इन्द्राणी पुछे वेवाणने, जीरे शी करी करणी तमे गृह, प्रभुने केम पोंखीया ॥ जीरे अमे तेहमा समज्या नही,

जीरे कारण दाखवो तेद, मभुने केम पोंखीया ॥ १ ॥ जीरे पहलु त घोसरु आटयुं, जीरे घोसरु गाडले होय, घोसरे केम पोंखीया, जीरे ससारे घोसर नाखीयु, जीरे ससारथी पामे पाररे, घोसरे एद पोंखीया ॥ २ ॥

॥ पोंखणुं बीजु ॥

जीरे इद्राणी पुछे वेवाणने, जीर मुसउ खाडणीए होय, मुसले रम पोंखीया, जीरे मुसले नदुल काढीए, जीरे ससारथी गुण काढो जोय, मभुने एम पोंखीया

॥ पोंखणु त्रीजु ॥

जीरे इद्राणी पुछे नराणने, जीरे रवैयो गोळीएहोय, रवैयं केम पोंखीया, जीरे रवैयेमाखणनोपजे, जीरे मगल काशी ए जोय, मभुने एम पोंखीया

॥ पोंखणु चोथु ॥

जीरे इद्राणी पुछे वेवाणने, जीरे त्राक ते रेंटीये होय, त्राके केम पोंखीया, जीरे त्राके ते सुतर नीपजे, जीरे ससारथी अर्थ काढो सोय, त्राके एम पोंखीया

॥ पोंखणु पाचमु ॥

जीर इद्राणी पुछे वेवाणने, जीरें सरीयो ते डुंडानेहोय, सरीये

त्रेम पोंखीया॥जीरे सरीये ते वस्तु सर्व नीपजे,जीरे मगल धर्मथी दाय,सरीये एम पोंखीया ॥६॥जीरे पांच मगळ एम परवर्नु, जीरे आदरे सघळा लोक, प्रभुने एम पोंखीया, जीरे तेह कारण इहां क्युं, जीरे शुजाणे देवता लोक, प्रभुने एम पोंखीया ॥ ७ ॥ ॥ सपुर्ण ॥ शुल्चुक मिच्छामी दुकड ॥

॥ अथ राजुलनो विजणो ॥

आव्या आव्या उनाळाना दहाडाके राजुल वींजणो सुनालावो,मारा नेमने ढोल्ट वायके॥प्रभुने चरणे शिश नमा विके ॥ राजुल ॥ १ ॥ राजुल कहे सुणो सहियर मारीरे ॥ वींजणो था कारण हुलावु क,स्वामीने मूकी गिरनारे जावुरे, ससार छडी मुनिवर थावुके ॥ राजुल ॥ २ ॥ चद्रा कहे छे राजुल वालाके,सरळस्वभावि न होये काळाके, ते कारणे स्वामि तजीयेके ॥ बीजो वर तुमे मनमा भजीयेक ॥ ३ ॥ राजुल ॥ राजुल कहे बेनी बोलोम खोटांक॥स्याम वस्तुमा गुणछेमोटाके, एतो त्रण भुवननो स्वामिके॥ हुतो पूरण पुन्ये पामीक ॥४॥ ॥ राजुल ॥ जीनजी जीवव्यामनआणिक॥ रथडो फरी चाल्या पाप जाणिक, पशुआ उगारी दान तेदीधुक ॥ कुवर मन वांछित फळ लीधुंके ॥ ५ ॥ राजुल ॥ माता →

सुणो सुजाणके॥तुमे तो अनत गुण भगवानके, मारी आ
पुरो परवारके॥ कन्यापरणीनेवानरचारोके ॥६॥ राजुल
पुन कहे सुणो माता अमारिके॥परणु नही मनुष्यनी नारीके
मेतो शीव नारी मनमा धारिके ॥ मुजने लागे छे अति प्य
रिके ॥ ७ ॥ राजुल ॥ राजुल कहे सुणो सजनी अमारीके
हुतो नवभवकेरो नारीक॥ बीजी कोइ मनमा धारिके
जाणु शीववधू नारी धुतारीक ॥ ८ ॥ राजुल ॥ जीन
दान सवत्सरी देधुक ॥ भवियणनु कारज सिध्धुक ॥ सज
जादव जान लेइ चलियाक ॥ केवल पामी शिवपुरी वरियाक
॥ ९ ॥ राजुल ॥ राजुल दान पुन्य नित करतीक ॥ नेम
ध्यान हृदेमा धरतीके ॥ सजम लेइ गिरनारे चडीयाके
तोडी अष्ट करमना दलियाके॥ १० ॥राजुल॥ आवो रीत
जे कोइ गाशेक ॥ तस घेरमनवछित सुख थाशेके ॥ अ
विजेदणीपर बोलेक॥ नहि मारा नेम राजुलने तोलेक॥११
॥ राजुल ॥ जगमा धन्या ए नर नारिके ॥ हूना जन्म य
ब्रम्हचारिके ॥ यया द्रुपतिए ब्रम्हचारीके ॥ पाम्या शिवप
वेदु सुखकारीक ॥ १२ ॥ राजुल ॥ इति सपूर्ण ॥

—